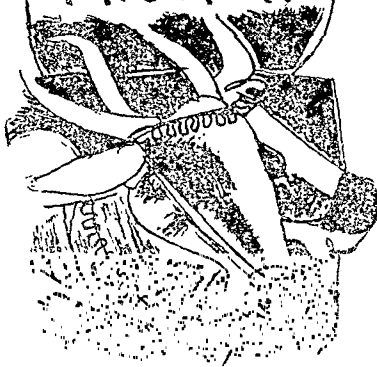
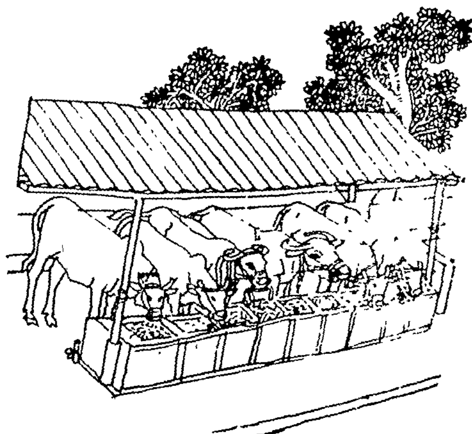
भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत

डॉ॰ विनोदबाला शर्मा

स्वस्थ पशु : क्यों और कैसे



GIFTED BY
RAJA RAMMOHUN ROY
LIBRARY FOUNDATION
Block-DD-34, Sector I Salt Lake City,
CALCUTTA-700064.



मूल्य : 40'00

प्रकाशक : जगदीश भारद्वाज

सामयिक प्रकाशन

३५४३, जटवाड़ा, दरियागंज

नई दिल्ली-११०००२

संस्करण : 1990

सर्वाधिकार : डॉ० विनोद बाला शर्मा, दिल्ली

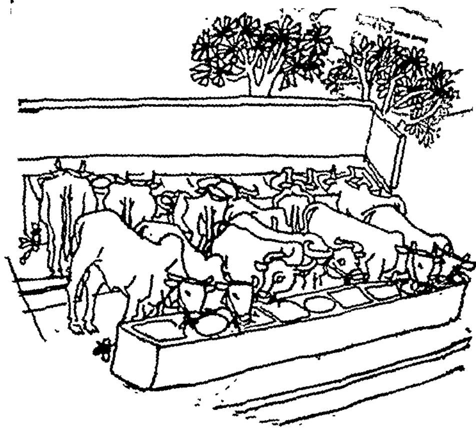
रूप-सज्जा : हरिपाल त्यागी

मुद्रक : नव प्रभात प्रिंटिंग प्रेस,

बलबीर नगर, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

SWASTHA PASHU : KYON AUR KAISE by Dr. Vinod Bala Sharma

Price : Rs 40.



क्रम

GIFTED BY
RAJA RAMMOHUN ROY
LIBRARY FOUNDATION
Block-DD-34, Sector I Salt Lake City,
CALCUTTA 700064

अपनी बात

पशु हमारे राष्ट्रीय जीवन का प्रमुख अंग है। और हैं देश की सम्पत्ति, कृषि की रीढ़ और राष्ट्रीय आय का एक अच्छा साधन।

पशु हमारे देश की कृषि व्यवस्था को तो संभाले हुए हैं ही, साथ ही अनेकों बेरोजगारों को रोजगार प्रदान करने का काम भी पशु करते हैं। गाँवों और शहरों के बहुत से लोग डेरी खोल कर, दूध-घी बेचकर, कुछ बैल-ठेले आदि चला कर अपनी जीविका चला रहे हैं।

इतना सब होते हुए भी हमारे पशुओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। अधिकांश पशु अस्वस्थ हैं। जबकि खेती-बाड़ी तथा पशुओं से सम्बन्धित अन्य उद्योगों की सफलता स्वस्थ पशुओं पर निर्भर है। प्रस्तुत पुस्तक 'स्वस्थ पशु : क्यों और कैसे' इसी विषय को लक्ष्य कर लिखी गई है। इसमें पशुओं की आवास-व्यवस्था, आहार, बीमारियों के इलाज आदि का विवेचन कर पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार करने के उपाय सुझाये गये हैं। साथ ही पशुओं से प्राप्त होने वाले पदार्थों – गोबर, दूध और चमड़े के समुचित उपयोग की रीतियों पर 'गोबर की खाद व गोबर गैस' तथा 'डेरी उद्योग' और 'चर्म उद्योग' विषयों के माध्यम से प्रकाश डाला गया है।

आशा है कि खेती-बाड़ी और पशु-व्यवसाय में लगे हुए अल्पशिक्षितों और नव-साक्षरों के लिए प्रस्तुत पुस्तक सरल, सुगम और उपादेय सिद्ध होगी।

लेखिका

१

पशुओं की आवास-व्यवस्था

डा० कपिल जानवरों के सरकारी अस्पताल के सबसे बड़े डाक्टर है। रोज ही उनके पास बहुत-से बीमार पशु आते हैं। कोई किसी बीमारी से पीड़ित, तो कोई किसी बीमारी से परेशान। कई बार तो ऐसे पशु भी उन्हें देखने को मिलते है, जो हड्डियों का ढांचा-भर रह गये हैं। ऐसे पशुओं को देखकर उन्हें बहुत दुख होता है। साथ ही दया आती है इन पशुओं के गरीब मालिकों पर।

एक दिन अत्यन्त दर्दनाक घटना हुई। एक भैंस अस्पताल के अहाते में ही मर गई। उसका मालिक ऐसे फूट-फूट कर रोने लगा जैसे उसका कोई सगा सम्बन्धी ही चल बसा हो। सभी हैरान थे। डाक्टर साहब ने पास जाकर उस आदमी को चुप किया। इतना अधिक दुखी होने का कारण पूछा। उसने बताया कि वह एक गरीब किसान है। दो-तीन बीघा जमीन है। उससे तो परिवार का गुजारा होता नहीं था। मेहनत-मजदूरी करके घर का काम चलाता रहा। कर्ज लेकर यह भैंस खरीदी थी कि भैंस का दूध बेचकर

परिवार का खर्चा चलाने में आसानी होगी। धीरे-धीरे कर्ज भी उतर जायेगा। लेकिन अब मैं क्या करूँ। गांव का महाजन तो मेरा जीना मुश्किल कर देगा।

किसान की आपबीती सुनकर डाक्टर साहब को बहुत दुख हुआ। उस समय उनकी आँखों के सामने ऐसे लाखों मजबूर किसानों और पशु-पालकों के चेहरे घूम गये। मन ही मन उन्होंने यह निश्चय किया कि गांव-गांव जाकर वे पशु-पालन सम्बन्धी जरूरी जानकारी लोगों को देंगे। इस काम के लिए उन्होंने ऐसे गांव को चुना, जो शहर की सीमा पर ही बसा हुआ है, ताकि किसानों के साथ-साथ शहर के पशु-पालक भी फायदा उठा सकें। आसपास के गांवों और शहर में इश्तिहारों के जरिये यह खबर पहुँचा दी गई कि सरकारी अस्पताल के डाक्टर कपिल गांव की पाठशाला में पशु-पालन के बारे में तरह-तरह की जानकारी देंगे।

शाम का समय था। आस-पास के गाँवों के बहुत-से किसान शहर में बैल-ठेला चलाने वाले और डेयरी वाले डाक्टर साहब के आने से पहले ही पाठशाला में आकर बैठ गये।

ठीक समय पर डाक्टर साहब आये। लोगों ने उनका स्वागत किया। उत्तर में उन्होंने हाथ जोड़ दिये। फिर कहना शुरू किया—"भाइयो ! आप सब यह तो जानते ही हैं कि गाय, बैल, भैंस आदि पशु आप लोगों के लिए कितने उपयोगी हैं। ये पशु किसान भाइयों की खेती-बाड़ी का सबसे अच्छा साधन हैं। बहुत से बेरोजगारों की रोजी-रोटी का सहारा। असल में आप लोगों की तरक्की के लिए यह जरूरी है कि आपके पशु स्वस्थ हों, मजबूत हों। उन्हें किसी प्रकार

की बीमारी न हो। यदि आपके पशु स्वस्थ होंगे, तो उनसे अधिक काम लिया जा सकेगा। दुधारू पशु अधिक दूध देंगे। उनकी बीमारी पर पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा। उनके इलाज के लिए इधर-उधर नहीं भटकना पड़ेगा। समय बर्बाद नहीं होगा। इसलिए मैं आपको कुछ ऐसी बातें बतलाऊँगा, जिनसे आपके पशु बीमारी से बच सकें। चुस्त और तन्दुरुस्त रहें।...

आप में से कम लोग ही शायद इस बात को जानते होंगे कि पशुओं की बीमारी का एक बड़ा कारण है पशुओं का आवास-स्थान (रहने की जगह) छोटा और गन्दा होना। हमेशा पशुओं का आवास-स्थान इस ढंग से बनाया जाना चाहिए कि उन्हें किसी प्रकार की तकलीफ न हो। यदि एक-दो ही पशु हैं और उनके रहने का इन्तजाम अलग नहीं किया जा सकता, तो उन्हें घर के कोने वाले कमरे में रखना चाहिए। नहीं तो पशुओं के गोबर और पेशाब की बदबू हर समय घर में फैली रहती है। पशुओं के भीतर-बाहर आने-जाने का रास्ता एक तरफ होना चाहिए, ताकि उनके आने-जाने से सारा घर ही गन्दा न हो। पशुओं के कमरे को हर समय साफ रखना चाहिए।...

यदि आठ-दस या इससे ज्यादा पशु हैं, तो उनके रहने का स्थान घर से अलग होना चाहिए। यह जगह आस-पास की जगह के मुकाबले ऊँचाई पर हो, ताकि उसमें बरसात का पानी न भर सके। पशुशाला के पास ही चरागाह और तालाब भी हो तो बहुत ही अच्छा रहे। किन्तु गन्दे नाले के पास पशुशाला बनाना ठीक नहीं।"

एक कृषक ने बीच में ही टोकते हुए पूछा, "डाक्टर साहब ! पशुशाला कच्ची होनी चाहिए या पक्की ?"

"वही सब तो मैं बताने जा रहा हूँ—" डाक्टर साहब बोले। उन्होंने बतलाया, "जो व्यक्ति अपने पशुओं के लिए पक्के घर बनवा सकते हैं, उन्हें अवश्य ही पक्के घर बनवाने चाहिए। पर जिनके पास इतना पैसा नहीं है, वे कच्चे घरों को ही अच्छी तरह से बनवायें। पशुओं के रहने की जगह चाहे कच्ची हो या पक्की—उसमें हवा, धूप, उजाले और साफ-सुथरे पानी का इन्तजाम होना चाहिए।···

स्थान के हिसाब से पशुशाला का रुख दो तरफ रखा जा सकता है। एक पूर्व-पश्चिम की तरफ, दूसरा उत्तर-दक्षिण की तरफ। पूर्व-पश्चिम रुख होने से पशु गर्मियों में लू और जाड़ों में ठंडी हवा से बचे रहते है। इससे उनके बीमार रहने का डर भी कम रहता है। उत्तर-दक्षिण रुख से पशुशाला में धूप ज्यादा देर तक रहती है। धूप से पशुशाला में सीलन नहीं होती। फर्श और दीवारें सूखी रहती है। पेशाब और गोबर की बदबू नही आती। बीमारियों के कीटाणु मर जाते हैं।···

असल में पशुशाला का रुख चाहे कोई भी हो, उसमें भरपूर धूप, हवा और रोशनी रहनी चाहिए। पशुशाला की चारदीवारी लगभग चार फुट ऊँची ठीक रहती है। चारदीवारी की जगह तारों का घेरा भी बनाया जा सकता है; किन्तु काँटेदार तारों का इस्तेमाल कभी नही करना चाहिए। इनसे पशुओ के घायल होने का डर रहता है। चारदीवारी के अन्दर ऊँचे, घने, छायादार पेड़ हों। पेड़ वही लगायें

जिनके पत्ते पशुओं को नुकसान न दें । घनी छाया वाले पेड़ों के नीचे आराम करके पशु बहुत सुख महसूस करते हैं ।···

पशुओं को तेज सर्दी, गर्मी और बरसात से बचाने के लिए कमरे होने चाहिए । इनमें हर एक पशु के लिए ८ फुट लम्बी और ६ फुट चौड़ी जगह हो । यदि पैसा हो तो पशुओं के लिए भी पक्के घर बनवाये । फर्श सीमेंट का हो किन्तु चिकना न हो । फर्श में तरह-तरह के नमूने बनवाकर उसकी चिकनाहट को कम किया जा सकता है । ईंटों को सीमेंट से जोड़कर बना हुआ फर्श भी अच्छा रहता है । खुरदरे और ईंटों के फर्श पर पशुओं के फिसलने का डर नहीं रहता । कच्चे फर्श पर राख या बालुई मिट्टी बिछा देनी चाहिए, राख या मिट्टी पशु के पेशाब को सोख लेती है और पशु के बैठने की जगह गीली नहीं हो पाती । इस राख को रोज सुबह खाद के गड्ढे में डालते रहना चाहिए, ताकि पशुओं के कमरे में किसी प्रकार की गन्दगी न रहे । कमरे से लगी हुई सीमेंट की एक नाली होनी चाहिए, फर्श का ढलान एक इंच नाली की तरफ होना चाहिए, ताकि पशु के मल-मूत्र को धोकर नाली के रास्ते खाद के गड्ढे में पहुँचाया जा सके । नाली ढाई से तीन इंच चौड़ी और ढलानदार हो ।

पशुओं के कमरे की ऊँचाई दस-पन्द्रह फुट होनी चाहिए। दीवारें चाहे कच्ची हों या पक्की, पर उनमें छेद और गड्ढे नहीं होने चाहिए। इन गड्ढों में कई प्रकार के जहरीले जानवर हो जाने का डर रहता है, जिनके काटने से पशु मर भी सकता है ।"

एक कृषक ने बीच में टोकते हुए कहा, "डाक्टर साहब, पशुओं के कमरे में खिड़की या रोशनदान होना तो जरूरी नही है ?"

डाक्टर साहब ने जवाब दिया, "यही तो आप बहुत बड़ी भूल करते हैं। जानवरों में भी जान होती है। उन्हें भी तन्दुरुस्त रहने के लिए धूप, हवा और रोशनी की उतनी ही जरूरत है जितनी कि हम सबको। धूप और रोशनी से किसी भी तरह की बीमारी के कीटाणु नहीं पनप सकते। इसी तरह कमरे में जितनी अधिक शुद्ध वायु अन्दर आने का और अशुद्ध वायु बाहर निकलने का इन्तजाम होगा, उतनी ही कमरे में घुटन कम होगी। कमरे में ताजगी रहेगी।...

शुद्ध और ताजी हवा में जानवर खुश रहते हैं। तन्दुरुस्त रहते हैं। किसी तरह की बीमारी उन्हें नहीं हो सकती। दुधारू पशु ज्यादा दूध देते हैं। इसलिए पशुओं के कमरे में भी खिड़कियाँ और रोशनदान होने जरूरी है। हर एक पशु के लिए कमरे में एक खिड़की अवश्य होनी चाहिए। खिड़की की लम्बाई और चौड़ाई २×२ फुट हो। खिड़की फर्श से चार-साढ़े चार फुट ऊँची होनी चाहिए।...

कमरे की लम्बाई-चौड़ाई को देखते हुए कमरे में कई रोशनदान होने चाहिए। रोशनदान फर्श से सात-आठ फुट की ऊँचाई पर होने चाहिए। रोशनदानों में यदि लोहे की जाली लगा लें तो अच्छा रहता है। फिर कोई पक्षी अन्दर नहीं आ सकता। न ही रोशनदान में घोंसले रख सकते है। तेज सर्दी के दिनों में रात को खिड़कियाँ बन्द कर देते है

और रोशनदान खुले रहते हैं। इससे कमरों में ताजी हवा भी आती रहती है और पशुओं को ठंडी हवा के झोंके भी नहीं लगते।...

कमरे में लकड़ी के दरवाजे के अलावा जालीदार दरवाजे भी हों तो मक्खी, मच्छर भीतर नहीं घुस पाते।...

पशु-घर की छत यदि पक्की बनवा सकें, तो अच्छा है। नहीं तो सीमेंट की चादरों या खपरैल की छत ठीक रहती है। टीन की चादरों का छत के रूप में इस्तेमाल कभी न करें; क्योंकि टीन की छत धूप में ज्यादा गर्म और सर्दियों की रात में ज्यादा ठंडी हो जाती है। इससे पशुओं को गर्मियों में अधिक गर्मी और सर्दियों में अधिक सर्दी लगने का डर रहता है।...

साल में कम से कम एक बार पशु-घर में सफेदी अवश्य करा देनी चाहिए। यदि पशु-घर कच्चा है तो साल में दो-तीन बार दीवारों की अच्छी तरह लिपाई-पुताई अवश्य करनी चाहिए। एक बार बरसात से पहले लिपाई-पुताई करना बहुत जरूरी है।"

एक अन्य ग्रामीण ने कहा, "डाक्टर साहब, आपने पशु-घर के बारे में तो बहुत ही उपयोगी बातें बतलाई हैं। हम यह भी जानना चाहते हैं कि पशुओं को चारा खिलाने का इन्तजाम भी उसी कमरे में हो या अलग हो ?"

डाक्टर साहब ने प्रसन्न होकर कहा, "यह आपने ठीक पूछा। बात दरअसल यह है कि यदि आपके पास जगह काफी है, तो पशुओं को भोजन खिलाने का इन्तजाम अलग ही होना चाहिए। चारा खिलाने की जगह पर छप्पर डाल-

कर भी काम चलाया जा सकता है। पर चारा खिलाने वाली जगह का भी साफ होना जरूरी है। यदि आठ-दस ही पशु हों, तो उन्हें एक लाइन में ही बांधा जा सकता है। पशुओं की संख्या ज्यादा होने पर उनके खाने का इन्तजाम दो लाइनों में करना होता है। यदि पशुओं को एक लाइन में खड़ा करना है तो सामने की ओर एक 'खुरली' (खोर या नांद) रहती है। खुरली की चौड़ाई और ऊँचाई ३ फुट के लगभग होनी चाहिए। खुरली की पिछली दीवार थोड़ी ऊँची और आगे की दीवार नीची हो, ताकि खुरली धोते समय पानी बाहर निकल सके और पशु आराम से चारा खा सकें।...

खुरली ईंटों और सीमेंट की बनी हुई होनी चाहिए। इसके कोने गोल हों। खुरली के दोनों अगले किनारों पर एक-एक छोटा छेद हो। खुरली के पास पशुओं के खड़े होने की जगह व पीछे की नाली दोनों ही सीमेंट की, साफ ढलानदार होनी चाहिए, ताकि आसानी से धुलकर साफ हो सके।...

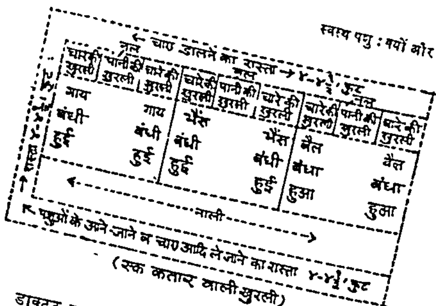
खुरली और नाली के बीच की दूरी कम से कम साढ़े पांच फुट होनी चाहिए। खुरली के पास के फर्श पर पड़े पशुओं के पेशाब और गोबर धोकर नाली के जरिये खाद के गड्ढे में पहुंचा दिया जाना चाहिए। खुरली से खाद के गड्ढे को दूरी ४०-४५ फुट के लगभग हो। नाली के पीछे चार-साढ़े चार फुट का रास्ता चारा आदि लाने के लिए और पशुओं के जाने के लिए हो। खुरली के सामने भी चार-साढ़े चार फुट का रास्ता चारा आदि डालने के

लिए हो।..

पशुओं को बाँधने के लिए रस्से की जगह लोहे की जंजीरों या गर्दन-फंदों का इस्तेमाल करना चाहिए। क्योंकि जंजीरों और गर्दन-फंदों को तो धोकर साफ किया जा सकता है, रस्सों को नहीं। खुरली के सामने पशुओं को बाँधते समय दो-दो पशुओं को अलग-अलग हिस्सों में बाँधना चाहिए। इसके लिए हर दो पशु के बाद लोहे की सरियों या बिना काँटे वाले तारों या लकड़ी के मजबूत डंडों को हर दो पशुओं के बाद लगा देना चाहिए। अलग-अलग रहने से पशु चारा खाते हुए या खड़े-खड़े आपस में लड़ नहीं सकते।...

चारा खिलाते समय गायों, भैंसों, बैलों आदि को अलग-अलग रखना चाहिए। दो-दो पशुओं को अलग-अलग बाँधने के लिए पहले एक चारे की खुरली होती है, फिर पानी की, फिर चारे की। इस प्रकार जितने पशु होंगे, उतनी ही चारे की खुरलियाँ होंगी। यदि पशुशाला तक नलों का पानी पहुँचाया जा सके तो एक-एक नल पानी की खुरलियो में लगवा देना चाहिए। इस बात को आप लोग शायद चित्र द्वारा अच्छी तरह समझ सकेंगे।"

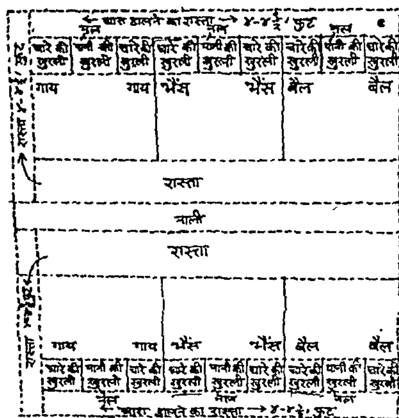
इतना कहकर डाक्टर साहब ने पशुओं के भोजन खाने की जगह की रूपरेखा खींच दी। जिसे पृष्ठ १४ के चित्र में दरसाया गया है।



(एक कतार वाली खुरली)

डाक्टर साहब ने आगे बतलाया, "यदि पशु आठ-दस की संख्या से ज्यादा हों तो पशुओं को दो कतारों में बांधना होगा। इसके भी दो तरीके हैं। एक तो पशुओं के मुंह आमने-सामने करके, दूसरा पशुओं की पूंछ को आमने-सामने करके। मुंह से मुंह की तरफ पशुओं को खड़ा करने का तरीका सस्ता तो है, पर ठीक नहीं। क्योंकि इस विधि से पशुओं को चारा खिलाते समय उन्हें खुरली के दोनों ओर खड़ा कर देते हैं। इससे चारा खाते समय एक पशु की सांस दूसरे के शरीर में जाती रहती है। ऐसे में यदि किसी पशु को छूत की बीमारी हो तो वह जल्दी ही दूसरे पशु और फिर सब पशुओं में फैल सकती है। इस विधि में दूसरी बुराई यह है कि पशु चारा खाते समय आपस में लड़ते है। इस लड़ाई-झगड़े में तेज-तर्रार पशु अपने सींगों से सीधे पशु को घायल भी कर सकता है। पशु लड़ते हुए चारे को भी इधर-उधर बिखेर देते है। इस विधि की तीसरी कमी यह

है कि पशुओं को चारा डालने में बहुत दिक्कत होती है। इसलिए जहाँ तक हो सके, पशुओं को एक-दूसरे की पूँछ की तरफ पूँछ करके ही बाँधना चाहिए। इस तरीके से चारा ले जाने वाले रास्ते की चौड़ाई ६-७ फुट रखी जाती है। चारा डालने के लिए दोनों खुरलियों के सामने ही चार-चार फुट के रास्ते बना दिये जाते हैं। दो कतारों में पशुओं को इस तरह बाँधा जाता है—



(दो कतारों वाली खुरली)

इस तरीके से पशुओं को बांध कर चारा डालने में आसानी रहती है।

में नहीं पहुँच सकती। पशुओं के आपस में झगड़ने का डर खत्म हो जाता है। एक ही चौड़ी नाली से दोनों तरफ के पशुओं का मूत्र और गोबर खाद के गड्ढे तक पहुँचा दिया जाता है।...

दिन में कम से कम दो बार चारागृह की सफाई करना जरूरी है। कभी-कभी फर्श पर डी० डी० टी० और फिनाइल भी डालते रहें।...

गाय और भैंस के छोटे बच्चों को हमेशा बड़े पशुओं से अलग बाँध कर चारा आदि देना चाहिए। उनके रहने का इन्तजाम भी बड़े पशुओं से अलग होना चाहिए। गाभिन गाय और भैंस को भी अन्य पशुओं से अलग रखना चाहिए। उन्हें अलग ही चारा खिलाना चाहिए। इतना ही नहीं, मरखने और बीमार पशु के भी रहने-खाने की जगह अलग-अलग होनी चाहिए।...

यदि पशुशाला में अधिक जानवर है और उसमें साँड़ भी पला हुआ है, तो साँड़ के रहने-खाने की जगह के साथ-साथ घूमने-फिरने का बड़ा-सा बाड़ा भी अलग होना चाहिए।"

आज की इस सभा का समापन करते हुए डा० कपिल ने कहा, "आज की सभा मैं इतना कहकर समाप्त करता हूँ कि आप अपने पशुओं का इन्तजाम करते समय हमेशा पशुओं की सुख-सुविधाओं का पूरा-पूरा ध्यान रखें। इसके अच्छे नतीजे स्वयं ही आपके सामने आयेगे। कल मै आपके साथ पशुओं के आहार (चारा आदि) की चर्चा करूँगा।"

इसके साथ ही पहले दिन की सभा समाप्त हुई। सभी प्रसन्न मुख अपने घरो को लौट रहे थे।

२

पशुओं का आहार

आज सभा का दूसरा दिन था। सभी लोग अपने-अपने स्थान पर आकर बैठ गये थे। बड़ी उत्सुकता से डाक्टर साहब के आने का इन्तजार कर रहे थे। ठीक समय पर डाक्टर साहब आये और कहना शुरू किया, "आपमें से बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि अन्य देशों की तुलना में हमारे देश के पशु बहुत कमजोर हैं। दूध भी कम देते है और काम करने की शक्ति भी कम है। बहुत से पशु सदा सुस्त और बीमार रहते है। इसका एक सबसे बड़ा कारण यह है कि हमारे यहाँ पशुओं को पौष्टिक खुराक नहीं दी जाती। कुछ तो हमारे यहाँ के किसान ही इतने गरीब हैं कि वे अपने पशुओं को अच्छी खुराक नहीं दे पाते। दूसरे जो धनवान है, उन्हें यह मालूम नहीं है कि कितनी और कैसी खुराक से पशु तन्दुरुस्त रह सकते हैं। इसलिए आज मैं पशुओं की खुराक के बारे में बतलाऊँगा।...

पौष्टिक खुराक वह है जिसमें विटामिन, प्रोटीन, खनिज लवण, चर्बी या चिकनाई, कार्बोहाइड्रेट, काष्ठ-तन्तु और पानी

उचित मात्रा में हों।···

ये सब पशुओं की खुराक के अंश हैं, तत्त्व हैं, हिस्से हैं। चारे-दाने में ये सब थोड़ी-ज्यादा तादाद में रहते हैं। हाँ, यह जानना जरूरी है कि खुराक का कौन-सा अंश पशुओं के किस काम आता है और कौन-कौन से खाने के पदार्थों में मिलता है।···

पहले विटामिन को ही लीजिए। विटामिन हर तरह से पशुओं के लिए बहुत जरूरी हैं। ये पशुओं को कई तरह की बीमारियों से बचाते हैं। ये आँखों की रोशनी बढ़ाने और दाँतों को मजबूत बनाये रखने में बहुत मदद करते हैं। दूध देने वाली गाभिन गाय-भैंसों को विटामिनों से बहुत मदद मिलती है। विटामिन कई तरह के होते हैं। इनमें से विटामिन 'ए' और 'डी' पशुओं के लिए बहुत जरूरी हैं। विटामिन 'ए' हरे चारे और हरी घास में पाया जाता है। इसीलिए हरा चारा और हरी घास पशुओं को खिलाना बहुत फायदेमन्द माना जाता है विटामिन 'डी' धूप के प्रकाश से मिलता है। इसीलिए पशुओं को खुली और रोशनी वाली जगहों में रखना तन्दुरुस्ती के लिए अच्छा माना जाता है।···

पौष्टिक आहार का दूसरा तत्त्व है प्रोटीन। शरीर को मजबूत बनाने का काम प्रोटीन करते हैं। प्रोटीन पशुओं के शरीर में मांस बढ़ाते है, पुट्ठे मजबूत करते हैं। कड़ी मेहनत का काम करने से पशुओं की जो नसें घिसती हैं या टूटती हैं, उनको पूरा करने का काम प्रोटीन का ही है। दुधारू व गाभिन गाय-भैंसों के लिए प्रोटीन वाला चारा बहुत जरूरी

है। प्रोटीन से पशु दूध अधिक देते हैं। प्रोटीन-युक्त चारे से बछड़े-बछिया तन्दुरुस्त होते हैं। यदि बछड़े-बछियों को शुरू से ही प्रोटीन ठीक तादाद में नहीं मिलता, तो वे तन्दुरुस्त बैल और गाय नहीं बन पाते। जरूरत से ज्यादा प्रोटीन भी पशुओं को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचाते, बल्कि उनकी शक्ति ही बढ़ाते हैं।...

फलीदार चारे और उसके बीजों, दो दल के अनाजों तथा खल में प्रोटीन अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। इसी-लिऐ दुधारू और अधिक मेहनत करने वाले पशुओं को खल अधिक मात्रा में दें।...

जिन तत्त्वों में नमक और धातुओं का मेल होता है, उन्हें खनिज लवण कहा जाता है। पशुओं के आहार में इस तत्त्व का महत्त्व भी प्रोटीन अथवा विटामिन से कुछ कम नहीं है। इस तत्त्व का महत्त्व तो इसी बात से पता चलता है कि जिन इलाकों के पानी में खनिज लवणों की कमी है, वहाँ के पशुओं को गण्डमाला नामक भयानक रोग हो जाता है। यह तत्त्व पशुओं की खुराक को पचाने में बहुत मदद करता है। हड्डियाँ मजबूत करने तथा टूटी हड्डियों को जोड़ने में इन तत्त्वों से बहुत मदद मिलती है। गाय-भैंस के छोटे बच्चों, गाभिन व दुधारू गाय-भैंसों के लिए खनिज लवण बहुत फायदेमन्द हैं। नमक इन तत्त्वों की कमी को पूरा करता है। अतः पशुओं को प्रतिदिन कुछ मात्रा में नमक अवश्य देना चाहिए।...

चर्बी या चिकनाई के नाम से ही आप समझ सकते हैं कि चर्बी या चिकनाई वाले पदार्थ पशु के शरीर में चर्बी

और शक्ति पैदा करते हैं। इसलिए इन तत्वों से युक्त पदार्थ पशुओं को देते समय इस वात का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए कि पशु कितनी मेहनत करता है, या गाय-भैंस कितना दूध देती है। क्योंकि जरूरत से ज्यादा चिकनाई कई पशुओं में चर्वी अधिक बढ़ा देती है। इससे पशु वेडौल और मोटा हो जाता है। अधिक मेहनत और फुर्ती से काम नहीं कर पाता। विभिन्न प्रकार की खलों, मूंगफली, सरसों तथा कई प्रकार की फलियों के बीजों में चर्वी या चिकनाहट वाले तत्त्व पाये जाते हैं।...

जिन्हें पढ़े-लिखे लोग कार्बोहाइड्रेट कहते हैं, उसे ही देशी भाषा में मॉड़ कहा जा सकता है। गेहूँ, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि प्राय: सभी अनाज के दानों में मॉड़ के तत्त्व बहुत अधिक मात्रा में होते है। ये शरीर को शक्ति और गर्मी देने वाले तत्त्व हैं। इसलिए अधिक काम करने वाले पशुओं और दूध देने वाली गाय-भैंसों की खुराक में ये तत्त्व अधिक मात्रा में होने चाहिए।...

काष्ठ-तन्तु को ही दूसरे शब्दों में सख्त रेशे भी कहा जा सकता है। गेहूँ आदि का भूसा, सूखा चारा, घास आदि ही पशु-आहार के काष्ठ-तन्तु हैं। पेट इन्हीं चीजों के सहारे भरा जा सकता है।...

पशु-आहार का एक अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व है पानी मनुष्य की तरह पशुओं के लिए भी पानी जीवन-शक्ति है इसके बिना पशु जिन्दा नहीं रह सकता। पशुओं के शरी में भोजन पचाने से लेकर खून के दौरे तक की लगभग स क्रियाएँ पानी की मदद से ही पूरी होती हैं। हरे चारे

पानी की मात्रा सबसे अधिक होती है। पशुओं को दिन में कम से कम तीन बार पिलाना चाहिए।"

डाक्टर साहब ने अपनी बात को खत्म-सा करते हुए कहा, "इन सब बातों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि यदि भूसा, सूखा चारा आदि पशुओं का पेट भरने के लिए जरूरी हैं, तो ये सब पौष्टिक तत्त्व पशुओं को तन्दुरुस्त बनाने के लिए अनिवार्य हैं।"

पशुओं को खुराक देते समय इस बात का खास ध्यान रखना चाहिए कि कौन-सा पशु अधिक काम करता है, कौन-सी गाय-भैंस गाभिन है या अधिक दूध देती है। किस पशु की बढ़ने की उम्र है। यदि आप लोग इन सब बातों को ध्यान में रख कर पशुओं को कम-ज्यादा खुराक देंगे तो आपके सभी पशुओं को उनकी जरूरत के हिसाब से खुराक मिल सकेगी।"

चारे मुख्यतः दो तरह के होते हैं—सूखे चारे और हरे चारे। गेहूँ, धान, जौ, जई, चने आदि के भूसे तथा सूखी घास, ज्वार, बाजरे की सूखी पूलियों को सूखा चारा कहा जा सकता है।

सर्दी में होने वाली बरसई, जौ, जई, मटर, बरसीम, जापानी सरसों आदि हरे चारे के रूप में मिल जाती हैं।

गर्मी में गिनी घास, चरी, मक्का, ज्वार, बाजरा, मोठ आदि को हरे चारे के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

एक औसत वजन और औसत तन्दुरुस्ती की गाय आठ किलो से दस किलो तक रूखा चारा खा सकती है। किन्तु यदि हरे चारे के दिन हों तो सूखे चारे की मात्रा आधी कर

देनी चाहिए और उससे चार या पाँच गुना हरा चारा मिला देना चाहिए। यानी एक दिन में आठ-दस किलो सूखा चारा खाने वाली गाय के लिए चार-पाँच किलो सूखा और पन्द्रह से अठारह किलो तक हरा चारा काफी होता है। हरे चारे के बदले साइलेज (जमा किया हुआ चारा) भी सूखे चारे के साथ मिला कर खिलाया जा सकता है। पर साइलेज हरे चारे से कम मात्रा में डालना चाहिए; क्योंकि यह बहुत ही पौष्टिक होता है। अधिक मात्रा में पशु इसे हजम नहीं कर सकता। दुधारू पशुओं के दूध की मात्रा बढ़ाने में भी साइलेज बहुत सहायक होता है।…

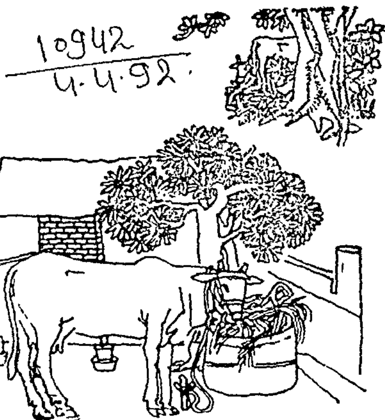
दूध न देने वाली गाय की तन्दुरुस्ती बनाये रखने के लिए चारे के अलावा एक किलो बाँट-दाना भी देना जरूरी है। बाँट-दाने में जौ, चना, मक्का, मटर, बिनौला, सरसों आदि शामिल होते हैं।…

दुधारू गाय को इन सब चीजों का मिला-जुला एक किलो बाँट-दाना देना तो जरूरी है ही, इसके अलावा हर ढाई किलो दूध के पीछे एक किलो बाँट और फालतू देना चाहिए। इस प्रकार दस किलो दूध देने वाली गाय के लिए एक किलो बाँट जरूरी होगा तथा चार किलो बाँट दूध बढ़ाने के लिए।"

डाक्टर साहब अपनी बात पूरी कर भी न पाये थे कि एक किसान ने निवेदन के स्वर में कहा, "डाक्टर साहब! यदि आप गाय की खुराक को लिख दें, तो हम भी कागज पर लिख लेंगे। तभी आपके कहने के मुताबिक गाय को चारा-दाना देने की कोशिश करेंगे।"

डाक्टर साहब बहुत खुश हुए। वे समझ गये कि सभी मेरी बात को ध्यान से सुन रहे हैं। मेरी बातों पर अमल करना चाहते हैं। इसीलिए उन्होंने गाय के लिए

10942
5.5.92



अच्छी नस्ल की गाय चारा खाती हुई

पौष्टिक आहार की सूची इस प्रकार बनायी—

(१) सूखा चारा (भूसा आदि) —४ से ५ किलो तक

(२) हरा चारा (बरसीम आदि) —१६ से २० किलो तक

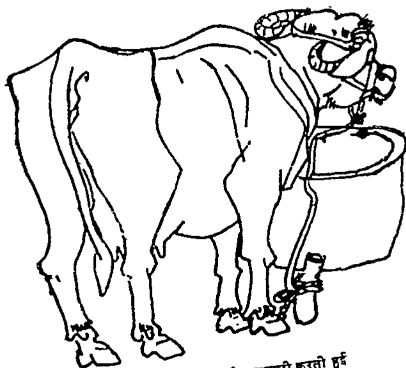
(३) बाँट-दाना —२ से २ किलो ५०० ग्राम तक

(४) बिनौला —१ से १ किलो ५०० ग्राम तक

(५) खल —८०० ग्राम से १ किलो २५० ग्राम तक

(६) नमक —३० ग्राम से ५० ग्राम तक

एक अन्य किसान ने पूछा, "क्या भैंस को भी इसी हिसाब से चारा-दाना दिया जाता है। कृपा करके भैंस के लिए आहार की सूची बना दीजिए।"



अच्छी नस्ल की भैंस जुगाली करती हुई

डाक्टर साहब ने बताया, "आम तौर पर भैंस की खुराक गाय की खुराक से कुछ ज्यादा होती है। भैंस आम तौर पर एक दिन में १०-१२ किलो तक सूखा चारा खा

सकती है। दूध न देने वाली भैंस को कम से कम एक किलो बाँट-दाना तो देना ही चाहिए। इसके अलावा हर दो किलो दूध के पीछे एक किलो बाँट-दाना और दिया जाता है।

दिन में बारह किलो दूध देने वाली भैंस का पौष्टिक आहार इस प्रकार होगा—

(१) सूखा चारा (भूसा आदि) — ५ से ५ किलो ५०० ग्राम तक

(२) हरा चारा (बरसीम आदि) — २० किलो से २२ किलो तक

(३) बाँट-दाना — ३ किलो

(४) बिनौला — २ किलो ५०० ग्राम

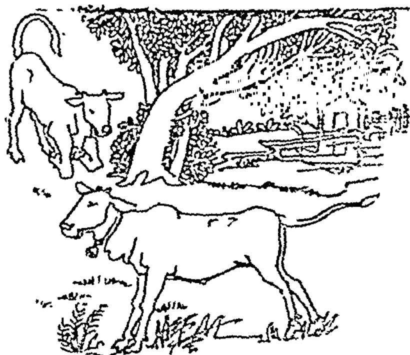
(५) खल — १ किलो से १ किलो ५०० ग्राम तक

(६) नमक — ३० ग्राम

गाभिन गाय-भैंसों को यदि अन्तिम दो महीनों में एक किलो बाँट-दाना और फालतू दे दिया जाए तो उनका शिशु तन्दुरुस्त होता है और वे दूध भी अधिक देती हैं। इन दिनों बिनौले नहीं देने चाहिए। बिनौलों से कब्ज होने का डर रहता है।...

नये बछड़े-बछियों की बढ़ोतरी के लिए यह आवश्यक है कि एक महीने का होने तक उन्हें कम से कम ढाई किलो दूध पीने दिया जाये। इसके बाद वे मुलायम भूसा और हरा चारा खाना सीख जाते हैं। इसी समय उन्हें थोड़ा-थोड़ा बाँट-दाना देना शुरू कर देना चाहिए। छः माह की

उम्र से एक साल की उम्र तक उन्हें एक किलो बाँट-दाना देने लगें तो वे एक अच्छी गाय या भैंस, बैल या भैंसा बन सकते हैं। एक साल से बड़े बछड़े-बछियों के लिए बाँट-दाने की तादाद बड़े पशुओं जितनी ही होती है।'''



सुन्दर व स्वस्थ बछड़े उछल-कूद करते हुए

दो साल या उससे बड़े बछड़ों की खुराक वही होती है जो कि दिन-भर हल चलाने वाले या दिन-भर ठेला चलाने वाले बैल की होती है। एक बैल आम तौर पर एक दिन में दस-बारह किलो तक सूखा चारा खा सकता है। इसलिए दिन-भर काम करने वाले बैल की खुराक इस प्रकार होगी—

(१) सूखा चारा (भूसा आदि)—५ से ६ किलो तक

(२) हरा चारा (बरसीम आदि)—२० से २४ किलो तक

(३) बांट-दाना	— ४ किलो
(४) खल	— १ किलो ५०० ग्राम
(५) नमक	— ५० से ६० ग्राम



गाड़ी खींचते हुए स्वस्थ बैल

आज की चर्चा का लगभग समापन करते हुए डाक्टर कपिल ने कहा, "मैंने पशुओं की जो खुराक बतलाई है, आशा है, आप उस हिसाब से अपने पशुओं को चारा-दाना देंगे। ऐसा करने से आप स्वयं देखेंगे कि आपके पशुओं की दशा में आशा से ज्यादा सुधार हुआ है। आपके दुधारू पशु अधिक दूध देंगे। बैल अधिक काम कर सकेंगे। चार कमजोर बैल रखने से अच्छा है, दो ताकतवर बैल रखे जायें। इसी प्रकार दो-दो किलो दूध देने वाली दो गाय रखने से अच्छा है कि आठ-दस किलो दूध देने वाली एक गाय या भैंस रखी जाये। इससे मेहनत और खर्चा कम होगा, बचत ज्यादा।…"

पौष्टिक पदार्थ देने के साथ-साथ पशुओं को भोजन खिलाते समय अन्य बातों पर भी ध्यान देना जरूरी है। जैसे—

पशुओं का चारा आदि तैयार करने से पहले खुरली को अच्छी तरह साफ करें।

पानी पिलाने वाले बर्तन, नाँद या खुरली की भी अच्छी तरह सफाई करें।

जहाँ पशु चारा आदि खायें, वह जगह साफ-सुथरी और सूखी हो।

हरे चारे की बारीक कुट्टी काट कर पशुओं को देनी चाहिए। क्योंकि बारीक चारे को वे आराम से चबा-चबाकर खा लेते हैं। ऐसा चारा आसानी और जल्दी से पचता है।

चारे को अच्छी तरह मिला कर तैयार करना चाहिए। दूध दुहने से कुछ घंटे पहले या बाद में चारा और साइलेज देना चाहिए। नहीं तो साइलेज आदि की खुशबू दूध में आने का डर रहता है।

पशुओं को दिन में तीन बार पानी पिलाना चाहिए। पानी हमेशा ताजा हो। पशुओं को नियत समय पर चारा-दाना देना चाहिए।"

इस प्रकार आज की सभा में डाक्टर साहब ने बहुत-सी उपयोगी जानकारी देते हुए कहा, "आज के लिए इतना ही काफी है। कल मैं आप लोगों को पशुओं की बीमारी और इलाज के बारे में बतलाऊँगा। कुछ नुस्खे भी बतलाऊँगा, जो व्यक्ति लिखना चाहें, कापी-पेंसिल लेकर आएँ।"

पशुओं के लिए पौष्टिक आहार की जानकारी पाकर सभी उत्साह और उमंग से भरकर अपने-अपने घरों को गये।

३

पशुओं की बीमारियाँ और इलाज

आज सभा का तीसरा दिन था। आज पिछले दो दिनों से भी ज्यादा संख्या में लोग इकट्ठे हुए। अधिकतर लोगों के हाथों में कापी-पेंसिलें थीं। क्योंकि डाक्टर कपिल ने कल कह दिया था कि कल मैं आप लोगों को कुछ दवाइयों के नुस्खे बतलाऊँगा। आप चाहें तो लिख लीजियेगा।

डाक्टर कपिल समय पर आये और कहना शुरू किया, "भाइयो! आवास और आहार का अच्छा इन्तजाम होने पर भी पशु कभी-कभी बीमार हो जाते हैं। कभी कोई घातक रोग हो जाता है और कभी कोई छोटी-मोटी बीमारी। यह आप लोगों का फर्ज है कि आप अपने पशुओं की सेहत का पूरा-पूरा ध्यान रखें। पशुओं की चाल-ढाल से पहचानें कि कहीं आपका कोई पशु बीमार तो नहीं है। पशुओं को बीमारियों से बचाने की पूरी-पूरी कोशिश करें। यदि फिर भी आपका पशु किसी रोग से पीड़ित हो जाए तो उसका तुरन्त ही इलाज करायें।"

एक कृषक ने बीच में ही बात काटते हुए कहा, "डाक्टर

साहब, पशु बोलते तो हैं नहीं, इसलिए हमें शुरू में तो बीमारी का कुछ पता नहीं चलता और बीमारी के बढ़ने पर इलाज कराने का कोई लाभ नहीं। इस समस्या को कैसे सुलझायें ?"

डाक्टर साहब धीमे से मुस्कराये और बोले, "आपकी समस्या ठीक ही है। लो, सबसे पहले मैं आप लोगों को बीमार पशु के लक्षण ही बतलाये देता हूँ। कृपया ध्यान से सुनें—

बीमार पशु का सबसे पहला लक्षण यह है कि पशु चारा-दाना ठीक से नहीं खाते या बिल्कुल ही खाना बन्द कर देते हैं। जुगाली भी कम करते हैं, या करते ही नहीं।

तबीयत ज्यादा खराब होने पर पानी भी नहीं पीते। पर अफारा जैसी बीमारियों में जरूरत से ज्यादा पानी पीते हैं।

दूध कम देते हैं। तबीयत अधिक खराब होने पर बछड़े-बछियों को थनों से मुँह भी नहीं लगाने देते और दूध देना बिल्कुल बन्द कर देते हैं।

बीमार पशु दूसरे पशुओं से दूर बैठना पसन्द करते हैं।

बेचैनी की हालत में कभी पशु उठते हैं, कभी बैठते है। अपनी टाँगों को बार-बार पटकते है। या सिर को अपने ही शरीर पर इधर-उधर मारते हैं।

बीमार पशु सुस्त हो जाते हैं। सिर को झुकाये रहते हैं या धरती पर टिका कर बैठते हैं।

किसी बीमारी में लँगड़ाने लगते हैं और किसी में छटपटाने लगते हैं।

आँख, नाक और मुँह से पानी बहता है।

रोयें खड़े हो जाते हैं। थूथन सूख जाता है।

कान गरम हो जाते हैं और लटके रहते हैं।

बीमार पशुओं का गोबर रंगदार, खून मिला हुआ और बदबूदार होता है। गोबर में कभी-कभी गाँठें-सी होती हैं।

बीमार पशु का पेशाब या तो गाढ़े रंग का होता है, या बिना किसी रंग का। पेशाब में भी कभी-कभी खून आता है।

स्वस्थ पशु के शरीर का तापमान आम तौर पर १०० से १०२ डिग्री फारेनहाइट होना चाहिए। किन्तु बीमारी में घट जाता है या बढ़ जाता है। पशुओं का तापमान जानने के लिए भी थर्मामीटर होते हैं। पशु का तापमान जानने के लिए थर्मामीटर के पतले सिरे को गोबर करने के रास्ते से अन्दर घुसा कर, एक किनारे की तरफ झुका लेना चाहिए। फिर दो मिनट बाद थर्मामीटर निकाल कर देखना चाहिए कि तापमान कितना है।

नाड़ी की चाल एक मिनट में ४०-४५ बार से कम या ज्यादा हो तो समझना चाहिए कि पशु बीमार है। पशु की पूँछ की जड़ में उँगली को हल्का-सा दबा कर नाड़ी की गति परखी जा सकती है।

स्वस्थ पशु एक मिनट में १२ से १५ बार तक साँस लेता है। कोख एक मिनट में जितनी बार उठती-गिरती है, एक मिनट में उतने ही साँस समझने चाहिए। यदि एक मिनट में पशु १२ से १५ बार से कम-ज्यादा साँस ले रहा है तो समझना चाहिए कि पशु बीमार है।"

डाक्टर साहब ने आगे फिर कहा, "ये तो हुए बीमार पशु के लक्षण। अब मैं आपको पशुओं की प्रमुख बीमारियों और उनके इलाज के बारे में जानकारी दूंगा।

छूत की बीमारियां

पशुओं के छूत के रोग बहुत ही खतरनाक समझे जाते हैं। क्योंकि ये जल्दी ही एक पशु से दूसरे पशुओं तक फैल जाते हैं। छूत की बीमारी में अधिकतर पशु मर जाते हैं। इसलिए छूत की बीमारियों के लक्षण दिखाई देते ही इलाज कराना चाहिए। छूत के प्रमुख रोग ये हैं—

(१) शीतला माता : छेरा, पौंका, माता, बड़ा रोग, वाह, मोक आदि इसी बीमारी के नाम हैं। इस बीमारी में पशु का तापमान १०६ डिग्री फारेनहाइट से १०८ डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ जाता है। पशु कांपने लगता है। रोएँ खड़े हो जाते हैं। दांत बजने लगते हैं। भूख कम और प्यास ज्यादा लगती है। दूध वाले पशु का दूध भी घट जाता है। पशु गोबर थोड़ा-थोड़ा करता है। गोबर में आंव और खून आता है। आँख, नाक और मुंह से रालेदार पानी-सा बहता है। साँस से बदबू आती है। मुंह पहले लाल हो जाता है और फिर उसमें छाले पड़ जाते हैं। छाले फूटने पर मुंह में घाव हो जाते हैं। कमजोरी के कारण पशु उठ नहीं पाता और छः दिन के अन्दर-अन्दर मर जाता है।

इस बीमारी से पशुओं को बचाने का सबसे अच्छा उपाय है, बीमारी से पहले ही पशुओं को टीका लगवा दें। किसी एक पशु पर शीतला माता का प्रकोप होते ही उसे

दूसरे पशुओं से दूर रखें।

बीमार पशु का फौरन ही डाक्टर से इलाज कराना चाहिए। सीरम का टीका इस बीमारी का सबसे अच्छा इलाज है। वैक्सीन नाम की दवाई भी दी जा सकती है। मुंह को लाल दवाई मिले हुए पानी से धोना चाहिए। यदि थनों और हवाने (बाँक) पर भी छाले हों तो नीम की पत्ती पानी में उबालकर उससे धोयें। धोकर हवाने और थनों को किसी तौलिये से अच्छी तरह सुखायें। फिर मक्खन या वैसलीन लगा दें।

बीमार पशु का दूध निकाल कर गड्ढे में दबा दें।

पशु को खाने के लिए हल्की चीजें दें। जैसे—चावल, गेहूँ या जौ का दलिया।

(२) चेचक: यह बीमारी पशु को केवल एक बार होती है, दुबारा नहीं। यह शीतला रोग की तरह खतरनाक भी नहीं है। इस रोग में थनों से दाने शुरू होकर पूरे हवाने पर फैल जाते हैं। पेनिसिलीन का टीका इस बीमारी का सबसे अच्छा इलाज है। शीतला की तरह चेचक के रोगी का भी हवाना और थन धोकर उस पर हल्के हाथों से मक्खन या घी का लेप कर दे। मक्खन में थोड़ा नीम का तेल, बोरिक एसिड या कपूर मिला दें तो जल्दी फायदा होता है।

(३) बछड़ों के सफेद दस्त—यह बीमारी अक्सर बीस-बाईस दिन के बछड़ों को होती है। बछड़ों को बार-बार सफेद रंग के दस्त आते हैं। दस्तों से इतनी अधिक कमजोरी आती है कि दो-चार दिन में ही पशु की मृत्यु हो जाती है।

इस बीमारी से पशुओं को बचाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि बछड़ों को पहले ही इस बीमारी के टीके लगवा लें। पशु के बीमार होते ही डाक्टर की सलाह से सल्फामिजेथीन नाम की दवाई देनी चाहिए। एक चमचा फार्मलिन नाम की दवाई को साढ़े चार लीटर पानी में मिला कर, कई दिन तक दिन में दो-दो बार देने से बीमारी दूर हो सकती है।

इसके अलावा ५० ग्राम देशी शराब, १२ ग्राम सोंठ, २ ग्राम पिसी हुई काली मिर्च, ७५० ग्राम दलिये में मिला कर दस खुराक बना लें। हर चार घंटे बाद एक खुराक देते रहें। इससे बीमारी से भी राहत मिलती है और कमजोरी भी दूर होती है।

बछड़ों को इस रोग से बचाने के लिए यह जरूरी है कि बच्चों को जन्म से आठ-दस दिन तक उनकी माँ का खूब दूध पिलाना चाहिए। बाद में भी इनके खाने-पीने और रहने का अच्छा इन्तजाम होना चाहिए।

(४) क्षय रोग—पशुओं का क्षय रोग या तपेदिक छूत की घातक बीमारी है। यह बीमार पशुओं के साँस आदि से दूसरे पशुओं को तथा उनके दूध से मनुष्यों को भी लग सकती है। इसलिए इस रोग के रोगी पशु को अन्य पशुओं से दूर रखना चाहिए। उसके दूध का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

फेफड़ों की तपेदिक में खाँसी आती है। पशु को बुखार आने लगता है।

हवाने की तपेदिक में पहले हवाने पर सूजन आती है।

फिर इसमें गाँठें पड़ने लगती हैं।

आँतों की सफेदी होने पर पशु का हाजमा खराब हो जाता है। पेट अफरने लगता है। गोबर पतला करता है।

यदि किसी पशु में इनमें से कोई लक्षण दिखाई दे तो आप लोगों को अपना पशु फुरन्त ही डाक्टर को दिखाकर उसका इलाज करवाना चाहिए। इस में आपकी थोड़ी सी लापरवाही आपके पशु की मौत का कारण बन सकती है।

(५) निमोनिया : यह भी छूत का भयानक रोग है। कोशिश करें कि रोग बढ़ने न पाये। रोग के बढ़ने पर पशु मर भी सकता है।



बीमार पशु की छाती पर तेल की मालिश कीजिए

इस बीमारी में पहले खाँसी उठती है। साँस लेने में दिक्कत होती है। इसलिए नथुने फूल जाते हैं। गर्दन खिच-सी जाती है। साँस लेते समय छाती ऊँची उठती और

गिरती रहती है।

इस बीमारी से अपने पशुओं को बचाने के लिए पशुओं को सूखे स्थान में रखें। ठंडी हवा लगने से बचायें। २२५ ग्राम सरसों का तेल, २२५ ग्राम तारपीन का तेल और ५५ ग्राम कपूर—इन तीन चीजों को मिला लें। फिर पशु की छाती और गले पर इसकी मालिश कर दें। मालिश करने से पशु को आराम मिलता है। मालिश करने के बाद पशु को कपड़ा अवश्य उढ़ाना चाहिए। आप लोग अपने पशुओं को सर्दियों में जो झूल उढ़ाते हैं, मालिश के बाद उसे ही उढ़ाकर छाती पर जरा कसकर बाँध दें, ताकि मालिश के बाद ठंडी हवा न लगे।

यह मालिश करने से बीमारी में कोई फर्क न पड़े तो डाक्टर को बुलाकर दिखा दें और उसकी सलाह के अनुसार सावधानी बरतें।

(६) जहरबाद : यह बीमारी बहुत अधिक भयानक है। इस बीमारी की यह पहचान है कि पशु लँगड़ा हो जाता है। उसकी जाँघों, पुट्ठों में सूजन आ जाती है। सूजी हुई जगह के नीचे कड़कड़ाहट-सी महसूस होती है। पशु को तेज बुखार हो जाता है। साँस लेने में तकलीफ होती है, कोख ऊपर-नीचे को होती दिखाई देती है।

असल में इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है। पशु कुछ ही घंटों में मर जाता है। इसलिए पशु में इस बीमारी के लक्षण देखते ही उसे दूसरे पशुओं से दूर कर देना चाहिए, ताकि दूसरे पशुओं को इसकी छूत न लगे।

जहरबाद से पशुओं को बचाने का सबसे सीधा उपाय

एक ही है—अपने पशुओं को जहरवाद के टीके लगवायें।

(७) गिल्टी रोग : इस बीमारी का भी कोई इलाज नहीं है। दो दिन के अन्दर-अन्दर पशु मर जाता है। इसीलिए एक पशु में इसके लक्षण देखते ही बीमार पशु को अन्य पशुओं से दूर कर देना चाहिए।

इस रोग में पशु का तापमान बहुत बढ़ जाता है। नाक में से खून भी निकलता है। पेशाब का रंग काला होता है। पशु को साँस लेने में दिक्कत होती है। शरीर काँपने लगता है।

(८) गलघोंटू : इस रोग से भी अक्सर पशुओं की मौत ही हो जाती है। यदि तीन दिन के अन्दर पशु न मरे तो ठीक भी हो सकता है। इसलिए इस रोग के लक्षण देखते ही पशु का इलाज शुरू कर देना चाहिए। इस बीमारी में पशु को तेज बुखार और खाँसी होती है। गला और जीभ सूजने लगती है। साँस लेते हुए आवाज होती है। जीभ मोटी और जामुनी रंग की होकर बाहर लटक जाती है। गले की सूजन बढ़ जाने से दम घुट जाता है और पशु मर जाता है।

बीमार-पशु का तुरन्त इलाज करवा कर पशु को मौत के मुंह में जाने से रोका जा सकता है। दूसरे पशुओं को वैक्सीन का टीका लगवाना जरूरी है।

(९) खुरपका-मुंहपका : इस बीमारी में पशु के मुंह और पैरों में छाले हो जाते हैं। मुंह से लार आने लगती है। पशु लँगड़ाने लगता है। बीमार पशु से काम नहीं लेना चाहिए। नहीं तो खुर खराब हो जाते हैं।

बीमार पशु का मुंह दिन में कम से कम तीन बार पानी

में फिटकरी या पोटैशियम परमैंगनेट (एक प्रतिशत) मिलाकर धोना चाहिए। मुँह धोकर डाक्टर का बताया हुआ कोई मरहम या दवाई लगा देनी चाहिए। छालों की दवाई का घरेलू नुस्खा इस प्रकार है—१०० ग्राम चाक, चारकोल २५ ग्राम, ६० ग्राम फिटकरी, कोपर सल्फेट ४ ग्राम, मीठा तेल ४ ग्राम, कपूर एक ग्राम। इन सब चीजों से बनाये गये मरहम को छालों पर लगाने से छाले जल्दी ठीक होते हैं। छालों के फूटने के बाद यदि खुर के घावों में कीड़े पड़ जायें तो उन्हें फिनाइल के पानी से धोकर पशु को साफ और सूखी जगह पर खड़ा करना चाहिए।

यह भी छूत की बीमारी है। अतः बीमार पशु के खाने-पीने और रहने का इन्तजाम अलग ही होना चाहिए।

(१०) **प्रसूति का ज्वर :** यह बीमारी ब्याई हुई गाय-भैंसों को होती है। इसका प्रमुख कारण है गाय-भैंस के ब्याने के बाद हवाने का सारा दूध निकाल लेना। इस बीमारी के लक्षण बड़े साफ है—गाय डरी हुई लगती है। पूंछ तेजी से हिलाती रहती है। फिर शरीर काँपनें लगता है। पाँव लड़खड़ा जाते है। गाय बेहोशी की हालत में गिर जातीं है। इस बीमारी का सबसे बड़ा लक्षण तो यह है कि गाय गोबर और पेशाब करना बन्द कर देती है। गाय या भैंस की इन हरकतों को देखते ही डाक्टर को बुलाकर इलाज शुरू कर देना चाहिए।…

इस बीमारी का एक घरेलू इलाज भी है। गाय को किसी साफ जगह में खड़ा करके उसके हवाने और थन गीले कपड़े से अच्छी तरह साफ करें। फिर साइकिल में

हवा भरने के पम्प से हरेक थन के छेद में से हवाने में हवा भरें। फिर हवाने को हाथ से धीरे-धीरे सहलाकार हवाने में हवा को बराबर फैला दें। हवा भरने के चार घटे बाद यदि गाय होश में आ जाय और खड़ी हो जाय तो समझना चाहिए कि वह खतरे से बाहर है। यदि चार घंटे बाद भी होश में न आए तो थोड़ी-सी हवा दुबारा भर देनी चाहिए। होश में आने का एक लक्षण है कि बीमार पशु पेशाव या गोबर करता है। होश में आने के बारह घंटे बाद तक दूध नहीं दुहना चाहिए। फिर तीन-चार दिन तक उतना ही दूध दुहना चाहिए जिससे कि हवाना बिल्कुल खाली न हो।"

डाक्टर साहब ने आगे कहा, "ये तो मैंने छूत के रोग और उनका इलाज बतलाया। अब मैं आपको कुछ साधारण रोगों के बारे में बतलाता हूँ, जो पशुओं को अक्सर होते रहते हैं। जिनका घरेलू इलाज भी किया जा सकता है।

१. मुंह के छाले : ज्यादा सख्त चारा या गर्म और तेज चीख खाने से पशुओं के मुंह में छाले पड़ जाते हैं।

इस रोग से पीड़ित पशु के मुंह को पोटैशियम परमैंगनेट के घोल (१ × १०००) या बोरिक एसिड या फिटकरी के घोल (२ प्रतिशत) से दिन में कई बार धोयें। फिर सुहागे को मिलाकर मरहम तैयार करें। इस मरहम को मुंह धोने के बाद लगाते रहें।

कई बार कब्ज से भी मुंह में छाले हो जाते हैं। पेट साफ करने के लिए ११३ ग्राम मैगनीशियम सल्फेट पीने के पानी

में मिला देना चाहिए। छोटी उम्र के पशुओं के लिए ५० ग्राम मैगनीशियम सल्फेट काफी है।

२. अफारा : ज्यादा चारा खा लेने से पेट फूल जाता है और साँस भी मुश्किल से आती है।

डाक्टर को बुला कर डाक्टरी यन्त्रों से पशु के बायीं तरफ छेद करा कर वायु (गैस, हवा) को निकलवा दें। काला नमक, आम का पुराना अचार, हींग, राई, सोंठ भी दे सकते हैं। पशु को इधर-उधर घुमाते रहें। ठीक होने तक चारा न दें।

३. *गला घुटना* : *गाजर, शलजम, गन्ने आदि खाते* समय कई बार पशु के गले में ये चीजें अटक जाती है।

ऐसे में पशु को गुनगुना पानी या थोड़ी-थोड़ी तादाद में तेल दें। चीज मुलायम होकर अन्दर सरक जाती है। यदि तब भी न निकले तो डाक्टर को बुलाकर निकलवा ले।

४. बंध या शूल : पशुओं के मेदे के एक हिस्से में गाँठ-सी हो जाती है। इसे ही बन्ध या शूल कहते हैं। पशु को कब्ज़ हो जाता है। साँस मुश्किल से आती है। पशु बार-बार पेट में पैर मारता है। पूँछ इधर-उधर पटकता है।

आम तौर पर एक किलो मैग-सल्फ को पौने दो लिटर पानी में मिलाकर देने से फायदा हो जाता है। यदि पशु जुगाली करने लगे तो समझना चाहिए कि पशु स्वस्थ होता जा रहा है। तब उसे हल्की खुराक खाने को देनी चाहिए।

यदि पशु छोटी उम्र का हो तो मैग-सल्फ और पानी की मात्रा आधी-आधी कर देनी चाहिए।

५. पेचिश : इसमें खून और आँव मिला हुआ गोबर

आता है। बीमारी के इलाज के लिए पहले ६१७ ग्राम अलसी का तेल दें। यदि फायदा न हो तो चावलों को उबालें और ३-४ ग्राम अफीम, १४ ग्राम कत्था और ३० ग्राम पिसी हुई खड़िया उबले हुए चावलों में मिलायें और इसे दिन में दो वार दें। छोटे पशु को आधा ग्राम अफीम, ७ ग्राम कत्था, १४-१५ ग्राम पिसी हुई खड़िया उबले हुए चावलों में मिला कर दिन में दो बार दें। यह खुराक तब तक रोज देते रहें जब तक कि पशु ठीक न हो जाये। खाने के लिए भूसा या चारा न देकर जौ का पानी, उबला हुआ दलिया या चावल देने चाहिए।

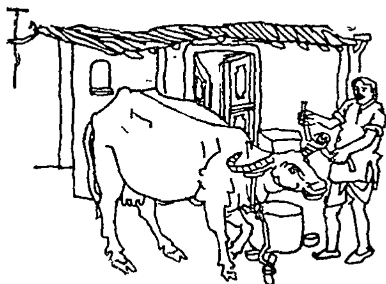
६. घसका : खाँसी को ही घसका कहते हैं। अक्सर ज्यादा ठंड लग जाने से पशु बार-बार खाँसता है। तारपीन और सरसों के तेल को बराबर-बराबर मिलाकर बीमार पशु के गले और छाती पर मालिश करें। ३० ग्राम अदरक के रस में थोड़ी-सी पिसी हुई अलसी, शहद और १५ ग्राम मुलहठी मिलाकर दिन में दो-तीन बार चटायें।

७. आँखें दुखना : यदि पशु की आँखें दुखनी आ जायें तो ५८१ ग्राम पानी में ३॥ ग्राम बोरिक पाउडर या पिसी हुई फिटकरी मिलाकर दिन में कई बार आँखों को धोयें। यदि फायदा न हो तो डाक्टर से पूछकर कोई दवा डालें।

८. थनपका : इस बीमारी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि गाय या भैंस का हवाना सूजकर लाल हो जाता है। हवाने और थनों में कड़ी गाँठें-सी हो जाती हैं। इसका इलाज यदि तुरन्त ही न किया जाये तो हवाने में घाव हो जाने का डर रहता है। बोरिक एसिड मिले हुए नीम के

गुनगुने पानी से हवाने की सिकाई करके हवाने को अच्छी तरह पोंछ लें। फिर कपूर लगा दें। वैसे पेनिसिलीन का टीका इसका सबसे सही इलाज है।

६. सींग का घाव : पशुओं के आपस में लड़ने, सींगों के रगड़ने, और सींगों में रस्सी बांधने से सींग में दरारें आ जाती है। यदि सींग का घाव सिर से थोड़ा ऊपर हो तो सींग को कटवा दें। कटे हुए सींग पर गर्म लोहा लगाकर खून रोकें और फिर टिंचर आयोडीन लगाकर कसकर पट्टी बांध दें।"



घायल सींग पर दवाई लगाकर पट्टी बांध दें

कुछ देर इधर-उधर देखकर डाक्टर कपिल ने फिर कहा, "अब तक मैंने पशुओं को होने वाली कुछ खास-खास बीमारियां और उनके इलाज बताये। अब मैं सोचता हूँ कि

कुछ ऐसे नुस्खे भी बतला दूं, जो पशुओं को होने वाली छोटी-मोटी शिकायतों को दूर करने में मदद करें।

जैसे पशुओं की पाचन-शक्ति बढ़ाने के लिए इस नुस्खे से चूर्ण बनायें—गन्धक, सोंठ पिसा हुआ चिरायता, कपूर, अजवाइन, राई, मेथी, हल्दी—हरेक ४६६-४६८ ग्राम की मात्रा में अलग-अलग पीस कर एक किलो पिसे हुए काले नमक में मिला लें। छोटे बछड़ों को चौथाई ग्राम व बड़े पशुओं को २६ ग्राम रोज सुबह-शाम दें।

पशुओं की खुजली दूर करने के लिए गन्धक का चूर्ण, मिट्टी का तेल और सरसों का तेल बराबर-बराबर मात्रा में मिलाकर पशुओं के शरीर पर मालिश करें।

आग से जलने पर नारियल का तेल २३३ ग्राम और ५८ ग्राम चूने के पानी को मिला कर इसका लेप जली हुई जगह पर करें।

कई बार जोड़ों के दर्द से भी पशु बहुत परेशान हो जाते हैं। २५ ग्राम कपूर को १२५ ग्राम मीठे तेल में मिला लें। पशुओं के शरीर पर इस तेल की मालिश करने से जोड़ों का दर्द ठीक हो जाता है।

यदि पशु को कब्ज हो तो ७५० ग्राम घी एक किलो दूध में मिलाकर पिला दें।"

डाक्टर साहब कुछ देर शान्त रहे और फिर कुछ गम्भीर होकर बोले, "मैं आप लोगों से एक निवेदन करना चाहूँगा कि बीमार पशु के साथ अच्छा व्यवहार करना और उसकी अच्छी तरह देखभाल करना हरेक पशुपालक का फर्ज ही नहीं, धर्म भी है। बीमार पशु को तेज ठंडी

हवा, धूप, मक्खी-मच्छरों से बचायें। खाने के लिए हल्की खुराक थोड़ी-थोड़ी करके दिन में कई बार दें। दवाई आदि देते समय परेशान न करें। बीमार पशु की देखभाल का काम नौकर पर ही न छोड़ें, बल्कि स्वयं भी उसका ध्यान रखें। उसके शरीर पर प्यार से हाथ फेर कर और बार-बार पुचकारकर उसे तसल्ली और खुशी देते रहें। ठीक होने के दो-तीन दिन बाद तक भी पशु से काम न लें और हल्की व पौष्टिक खुराक खाने को दें।"

डाक्टर साहब ने कहना जारी रखा, "इस प्रकार मैंने आप लोगों को पशुओं की बीमारियाँ, उनकी पहचान, इलाज और पशुओं की देख-रेख के बारे में बतलाया। एक बात मैं और कहना चाहूँगा कि पशु-पालन करते हुए आप कुछ सावधानियाँ बरतें, ताकि आपके पशु कम-से-कम बीमार हों। मेले में पशु खरीदते समय पशु की डाक्टरी जाँच करायें। यदि पशु में छूत की बीमारी के लक्षण हों तो पशु के टीका लगवा दें। मेले से पशु को लाकर कम-से कम दो-तीन हफ्ते तक दूसरे पशुओं से अलग ही रखें।...

पशुओं को हमेशा साफ-सुथरी हवादार जगह पर रखें। पौष्टिक आहार खाने को दें। पशुओं को दलदल में न घूमने दें। ऐसी जगह घास कभी न चरने दें, जहाँ घास कीचड़ में उगी हुई हो। दलदल और कीचड़ में कई प्रकार के छूत के रोगों के कीटाणु होते हैं जो किसी घाव, खुर, साँस या घास खाने के साथ-साथ शरीर में पहुँच जाते है। इससे पशु किसी भयानक छूत की बीमारी का शिकार हो जाता है।...

पशु को हमेशा तेज गर्मी, सर्दी और बारिश से बचायें। छूत के रोगी पशु को दूसरे पशुओं से अलग रखें। उनके भोजन और पानी के बर्तन भी अलग हों। रोगी पशु को चरागाह भी नहीं भेजना चाहिए। क्योंकि रोगी पशु के पेशाब और गोबर में भी रोग के कीटाणु होते हैं। ये कीटाणु चरागाह में घूमने वाले अन्य पशुओं के शरीर में पहुँचकर उन्हें भी बीमारी का शिकार बना सकते हैं।...

रोगी पशुओं के गोबर, मूत्र व इनके नीचे बिछने वाली पुआल आदि को किसी गहरे गड्ढे में डाल कर दबा दें।

यदि छूत का रोगी पशु मर जाये तो उसे किसी गहरे गड्ढे में दबा कर उस पर अनबुझा चूना डाल दें।...

रोगी पशु की देख-रेख करने वाले व्यक्ति को दूसरे पशुओं के पास नहीं आने देना चाहिए। उससे अन्य पशुओं के दूध दुहने का काम भी नहीं कराना चाहिए।...

जो छूत का रोग एक पशु को हो जाये, उस रोग के टीके पूरे गाँव के पशुओं को लगवा दें। इससे छूत की बीमारी, महामारी का रूप न ले सकेगी।"

अन्त में सभा का समापन करते हुए डाक्टर साहब ने कहा, "आज की सभा में मैंने जो कुछ कहा, आशा है, आप सभी उससे फायदा उठायेंगे और अपने पशुओं को बीमारियों से बचाने की कोशिश करेंगे। यदि आपमें से किसी को कोई शंका हो, कुछ पूछना हो या कुछ लिखना हो तो कल सुबह दस बजे मुझसे मिल सकते हैं।"

इसके साथ ही आज की सभा समाप्त हुई। सभी डाक्टर साहब का गुणगान करते हुए अपने-अपने घरों को गये।

४

पशुओं की दशा सुधारने के अन्य उपाय

आज सभा का चौथा दिन था। आज भी लोगों ने डाक्टर कपिल का उत्साहपूर्वक स्वागत किया। डाक्टर साहब ने कहना शुरू किया, "अब तक मैने आप लोगों को पशुओं की दशा में सुधार करने के बारे में कई उपाय सुझाये हैं। जैसे—पशुओं के लिए अच्छे आवास की व्यवस्था होनी चाहिए। पशुओं को पौष्टिक आहार दिया जाना चाहिए।···

जहाँ तक पौष्टिक आहार का सम्बन्ध है, कुछ धनी किसान अवश्य ही अपने पशुओं को बहुत-सी सुख-सुविधाएँ दे सकते हैं। किन्तु ज्यादातर किसान ऐसे है, जो अपने पशुओं को भरपेट चारा भी नहीं खिला सकते। दिसम्बर से जुलाई तक तो चारे की बहुत कमी रहती है। इन दिनों के लिए इकट्ठा करके रखा गया भूसा आदि भी खतम होने लगता है। तब हमारे निर्धन किसान चारा खतम होने के डर से पशुओं को भूसे आदि चारे की आधी खुराक ही देते हैं। इस तरह हमारे पशुओं को आधा भूखा ही रहना पड़ता है।

इन्हीं दिनों उनसे खेती का काम भी अधिक लिया जाता है। इसी से वे कमजोर और बीमार हो जाते हैं। उनकी हड्डियाँ निकल आती हैं। बाद में जब हरा चारा होने लगता है तो ये पशु चारे पर टूट पड़ते हैं। अन्धाधुन्ध चारा खा जाते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि बहुत से पशु बदहजमी का शिकार होकर मर भी जाते हैं।...

यदि थोड़ी समझ-बूझ से काम लिया जाये तो चारे की कमी को दूर किया जा सकता।...

हमारे पशुओं की दीन दशा का कारण है, कमजोर पशु शिशुओं का उत्पन्न होना। आज मैं इन दोनों समस्याओं से उबरने के कुछ उपाय सुझाने के उद्देश्य से आया हूँ।...

पहले चारे के बारे में ही बातें हो जायें। शायद आपने कभी यह सोचा भी न होगा कि चारे की कमी का एक बहुत बड़ा कारण है, बेकार पशुओं को रखना। अपनी धार्मिक भावना और दया-भाव के कारण आपमें से बहुत से व्यक्ति ऐसे पशुओं को भी पालते रहते हैं, जो बूढ़े हो गये हैं। खेती का काम नहीं कर सकते। जो गायें दूध नहीं देतीं और बूढ़ी है, उन्हें भी पालना वे अपना धर्म समझते हैं। बात कुछ हद तक ठीक भी है। किन्तु इसका दूसरे पशुओं के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। मेहनत करने वाले पशुओं को भरपेट खुराक भी नहीं मिल पाती है। आजकल तो हमारी सरकार ने बहुत से पशु-सदन और गौशालाएँ खोली है। वहाँ बेकार पशुओं की उचित देखभाल भी होती है। किसान अपने बेकार और बूढ़े पशु इन सदनों में भरती करा दें। और बचे हुए पशुओं की अच्छी तरह देखभाल करें। किन्तु इस बात

का अवश्य ध्यान रखें कि चारे की बर्बादी न हो। खुराक के हिसाब से ही अलग-अलग पशु को चारा डालें। एक साथ खुरली भरकर चारा डाल देने से पशु कम ही चारा खाता है। बचा हुआ चारा बेकार हो जाता है। यदि आप हिसाब से चारा डालेंगे तो चारे की बचत हो सकती है। चारे की बचत से आपको भी फायदा है, आपके पशुओं को भी।...

चारे की कमी को दूर करने का दूसरा उपाय है चारे की फसलों और घासों की ज्यादा से ज्यादा खेती। हमेशा ऐसा चारा बोयें जिसमें मेहनत और लागत कम हो, चारा ज्यादा हो।...

हरा चारा पशुओं के लिए बहुत ही पौष्टिक और स्वास्थ्यप्रद होता है। अब मैं गर्मी में बोये जाने वाले मुख्य-मुख्य चारों का वर्णन करता हूँ—

मक्का और ज्वार का हरा चारा बहुत ही ताकतवर होता है। हरे चारे के लिए मक्का मार्च से सितम्बर-अक्तूबर तक बोयी जाती है। दो महीने में इसका हरा चारा पशुओं को खिलाने लायक हो जाता है। इसका हरा चारा तो सबसे अधिक पौष्टिक होता है, किन्तु सूखा चारा किसी भी तरह से गुणकारी नहीं होता। जबकि ज्वार का सूखा और हरा दोनों ही तरह का चारा पशुओं के लिए अत्यन्त पौष्टिक होता है। इसे अप्रैल से जुलाई तक बोते है और अक्तूबर में फसल पूरी तरह तैयार हो जाती है। ज्वार का हरा चारा फूल आने पर खिलाना चाहिए। उससे पहले पशुओं को नुकसान देता है।

गवार व बाजरे को बरसात शुरू होने पर एक

साथ या अलग-अलग बोया जाता है। बाल आने से पहले ही बाजरे की दो-तीन कटाई मिल सकती है। गवार पशुओं के लिए अति पौष्टिक और स्वादिष्ट हरा चारा है। कड़ी



बाजरे के लहलहाते खेत में से पशुओं के लिए हरा चारा काटते हुए किसान

मेहनत करने वाले पशुओं को गवार के दाने बाँट-दाने के रूप में बहुत ताकत पहुँचाते हैं। बोने के दो-ढाई महीने बाद हरा चारा खिलाने लायक हो जाता है।

रमास पशुओं के लिए प्रोटीनयुक्त और स्वादपूर्ण हरा चारा है। यह मार्च से जून-जुलाई तक बोया जाता

हैं। दो-चार महीने में इसका हरा चारा तैयार हो जाता है। इसे मक्का और ज्वार के साथ भी बो सकते हैं।

मखमली सेम को मार्च से अगस्त तक बोकर अक्तूबर-नवम्बर तक हरा चारा ले सकते है। मक्का के साथ बोने से उपज अधिक होती है। इसमें पौष्टिक तत्त्व काफी मात्रा में होते है।

सोयाबीन का हरा चारा भी बोने के दो-ढाई महीने बाद मिल जाता है। इसकी फसल भी मई से अगस्त तक बो सकते हैं।

मोठ को जून-जुलाई में ज्वार या बाजरे के साथ मिला कर बो सकते हैं। इसे बोने के दो महीने बाद हरा चारा पशुओं को खिलाने लायक हो जाता है।

इन चारों के अतिरिक्त सर्दियों में भी बहुत से हरे चारे बोये जा सकते हैं। इनमें बरसीम, मेथी, रिजका, शफताल, लूसर्न, सेंजी आदि प्रमुख है। ये सभी फसलें लगभग एक जैसी है। इनमें बरसीम प्रमुख है। यह पौष्टिक भी सबसे ज्यादा होती है। इसकी फसल भी अधिक होती है। अन्य उपजों के ज्यादा से ज्यादा तीन कटाव ही मिल सकते हैं, जबकि बरसीम के छः कटाव तक ले सकते हैं। बरसीम को अक्तूबर में बोकर दिसम्बर से मई तक हर महीने उसकी कटाई कर सकते है। पशुओं के लिए, विशेष रूप से गाय-भैंस के लिए यह हरा चारा सर्वोत्तम है। पर अधिक से अधिक ४-५ किलो तक देना चाहिए। इससे ज्यादा देने पर पशुओं का पेट अफर जाता है।

जई को अक्तूबर से दिसम्बर तक बोया जाता है। फर-

वरी-मार्च में इसका हरा चारा खिलाया जा सकता है। यह कड़ी मेहनत करने वाले पशुओं को बहुत शक्ति देता है।

सरसों की फसल अक्तूबर में बोकर दिसम्बर में हरे चारे के लिए काटी जा सकती है। जापानी सरसों का चारा भी पशु बड़े चाव से खाते हैं।

सितम्बर-अक्तूबर में शलगम बोयी जा सकती है। इसकी फसल भी खूब होती है। और पशुओं के लिए यह पौष्टिक भी है। दिसम्बर से फरवरी तक मोटी-मोटी शलगम आराम से अशुओं को खिलाई जा सकती है।

पशुओं के चारे के लिए नई किस्म को शलगम बोना बहुत लाभप्रद रहता है। यह शलगम लाल और सफेद रंग की होती है। एक-एक शलगम का वजन ३-४ किलो तक होता है। इस शलगम के बीज को ३-३ इंच की दूरी पर बोना चाहिए। बीज अधिक गहरे नहीं बोने चाहिए। नहीं तो बीजों के धरती में ही सड़ जाने का डर रहता है। शलगम को हमेशा काट कर और भूसे में मिला कर पशु को खिलाना चाहिए, ताकि आसानी से पच सके। पशु इसे बड़े चाव से खाते हैं। इसे खाने से पशुओं को किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं होता।

चारे की इन फसलों के अतिरिक्त कई प्रकार की घास भी चारे के लिए उगाई जाती है। जैसे हाथी घास, सूडान घास, गिनी घास, चारा घास, हाथीकुडा आदि।

इस प्रकार यदि चारे की फसलें बोयी जायें तो हमारे देश में चारे की कमी बहुत कुछ दूर हो सकती है, और पशुओं को भी हरे चारे के रूप में पौष्टिक तत्त्व मिल सकते

हैं। चारे की फसल बोने के बावजूद भी कुछ समय ऐसा होता है, जब हरा चारा तो मिलता ही नहीं है, सूखा चारा भी खतम होने का डर बना रहता है। ऐसे में किसान पशुओं को सूखा चारा भी भरपेट नही खिलाते। किसान भाई चाहें, तो इस समस्या को हल कर सकते हैं।"

तभी सभा में एक दीन-हीन किसान ने उठ कर कहा, "डाक्टर साहब, जिस गरीब किसान के पास सूखा चारा भी कम ही मात्रा में हो और चारा खरीदने के लिए पैसा न हो, तो वह मजबूरी में अपने पशुओं को कम चारा नहीं देगा, तो क्या करेगा ?"

डाक्टर साहब ने इस भोले किसान के प्रति सहानुभूति जताते हुए उत्तर दिया, "मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ। आप जैसे लोगों की मजबूरी अच्छी तरह समझता हूँ। इसीलिए मैं आपको एक उपाय सुझाता हूँ, जिससे कि आपको अपनी समस्या सुलझाने में बहुत मदद मिल सकती है।"

सभी चकित होकर बोले, "क्या उपाय है डाक्टर साहब, आप अवश्य बतलाइये।"

डाक्टर साहब बोले, "उपाय यह है कि आप हरे चारे की फसलों को सूखे के दिनों के लिए इकट्ठा करके रखें। इसका भी एक खास तरीका है, जिसे साइलेज बनाना कहते हैं। साइलेज बनाने के लिए जमीन के अन्दर एक आम किसान को ६ फुट लम्बा, ६ फुट चौड़ा १२ फुट गहरा गड्ढा खोद लेना चाहिए। इस गड्ढे को 'साइलो-गर्त कहते हैं। जरूरत के हिसाब से गड्ढा ज्यादा लम्बा-चौड़ा भी हो सकता है। पर अधिक गहरा नहीं रखना चाहिए।

क्योंकि अधिक गहरा खोदने पर पानी की सतह आने का डर रहता है। गड्ढा ऊँची जगह पर खोदना चाहिए, ताकि बारिश का पानी उसमें न जा सके। गड्ढे की तह और बगलों को चिकनी मिट्टी से लीप दें। जिससे कि मिट्टी झड़-झड़कर न गिरे। यदि 'साइलो-गत' (गड्ढा) पक्का बनवा सकें तो बहुत ही अच्छा है।...

इन गड्ढों में हर तरह के चारे की फसलों और चारे की घासों की साइलेज बन सकती है। 'साइलो-गर्त' में दबाने से पहले चारे में थोड़ी हवा लगा देनी चाहिए। साइलो-गर्त में पहले थोड़े भूसे या सरकण्डे की तह जमा दें। उसके बाद चारे की बारीक कुट्टी काटकर भरते जायें। कुट्टी को पैरों से अच्छी तरह दबाते भी रहें, ताकि कुट्टी के बीच में हवा न रहे। भरते समय कभी-कभी नमक मिला हुआ थोड़ा-थोड़ा पानी छिड़कते रहें।...

कुट्टी बीच में गड्ढे के ऊपरी किनारों से काफी ऊँची रखनी चाहिए, ताकि दो-तीन दिन बाद जब हरा चारा दबकर नीचे बैठे तो कुट्टी के बीच में गड्ढा न हो, और कुट्टी की तह ऊपर तक बराबर रहे। चारे से गड्ढा भर जाने पर ऊपर सूखा भूसा डालकर बारह इंच ऊँची मिट्टी की तह से ढककर उस पर चिकनी मिट्टी से लिपाई कर दें या सीमेंट का पलस्तर करवा दें, जिससे कि बारिश का पानी या हवा 'साइलो-गर्त' में न जा सके। तीह महीने बाद साइलेज बनकर तैयार हो जाती है और पशुओं को सूखे चारे के साथ मिला कर खिलाई जा सकती है।...

यदि आपके पास हरा चारा काफी मात्रा में है तो

छोटे-छोटे कई 'साइलो-गर्तों' में साइलेज तैयार कर सकते हैं।···

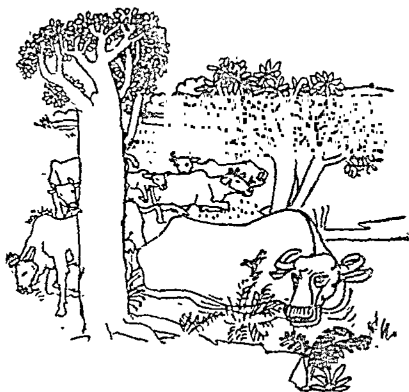
जहाँ तक जमीन के अन्दर साइलो-गर्त बनाने का प्रश्न है, रेतीली जमीन के अन्दर साइलो-गर्त नहीं बन सकते। पक्के गड्ढे बनवाने में खर्चा अधिक होता है। अतः राजस्थान जैसे रेतीले इलाकों के किसान लकड़ी के पेटीनुमा बक्से बनवा कर, उनमें साइलेज तैयार कर सकते हैं। लकड़ी के बक्सों में साइलेज बनाना सस्ता भी पड़ता है और सहूलियत भी रहती है। लकड़ी के ये बक्से फर्श से एक-डेढ़ फुट की ऊँचाई पर रखने चाहिए क्योंकि फर्श पर रखने से लकड़ी की पेटियों में दीमक लगकर चारा खराब होने का डर रहता है।···

बक्से के जोड़ों को मुल्तानी मिट्टी से बंद कर देना चाहिए। जब चारे की घास और फसलें पकने लगती है तो उनकी बारीक-बारीक कुट्टी काट कर अच्छी-अच्छी तरह दबा-दबा कर भर देना चाहिए। दबा-दबा कर इसलिए भरते हैं, जिससे कि पेटियों के अन्दर हवा न रह जाये। हवा रह जाने से चारा सड़ जाता है। चारा भरने के बाद इन पेटियों को लकड़ी के तख्तों से ढक देते हैं। तख्तों में कीलें ठोंक दी जाती है ताकि तख्ते हटें न। ढाई-तीन महीने तक बन्द रखने पर साइलेज तैयार हो जाती है। यह साइलेज हरे चारे से भी अधिक स्वादिष्ट, मुलायम और पौष्टिक होती है।···

अगस्त-सितम्बर का महीना साइलेज बनाने का सबसे अच्छा समय है। क्योंकि इन दिनों हरा चारा बहुत अधिक

होता है। आप उसे साइलो-गर्तों में भरकर उन दिनों के लिए रख सकते हैं जबकि चारे की कमी होती है या हरा चारा नहीं होता।...

इस प्रकार आप लोग हरे चारे की फसलें बोकर और साइलेज बनाकर पशुओं के चारे की समस्या को भी सुलझा



चरागाह का दृश्य—कुछ पशु घास चर रहे हैं और कुछ पेड़ों के नीचे बैठकर जुगाली का आनन्द ले रहे हैं

सकते हैं और हरे चारे के रूप में अपने पशुओं को पौष्टिक खुराक देकर उन्हें तन्दुरुस्त और मजबूत भी बना सकते हैं।...

हरे चारे के अतिरिक्त सूखा चारा तैयार करने का भी एक खास तरीका होता है। पौधों में फूल लगने पर उन्हें हरी अवस्था में ही काट कर, सुखा कर रख लेते हैं। ये पौधे न कम सुखाने चाहिए और न बहुत अधिक। हरी अवस्था में सुखाये गये पौधों का सूखा चारा हरे चारे की तरह ही पौष्टिक होता है। यह चारा चारे की विभिन्न फसलों और घासों से बनाया जाता है।…

भारत में पशुओं की हीन दशा का एक कारण भारत में चरागाहों की कमी है। चरागाह में चरने से पशुओं के शरीर में जो पौष्टिक तत्त्व पहुँचते हैं, वह अन्य किसी भी चारे में नहीं मिल सकते। इसलिए गाँवों की कम से कम पाँच प्रतिशत जमीन पर पंचायती चरागाह बनवाने चाहिए। जहाँ सभी के पशु बारी-बारी से चर सकें। चरागाहों में तरह-तरह की घास और फलीदार चारों के पौधे उगाने चाहिए। चरागाह में जगह-जगह ऐसे पेड़ होने चाहिए जिनके पत्ते पशु खा भी सकें और उनकी छाया में भी बैठ सकें। गाँव की बंजर भूमि पर भी वन-विभाग वालों की सहायता से चरागाह बनवाया जा सकता है।…

इस तरह चारे की फसलें बोकर, साइलेज बना कर और चरागाह बनवा कर आप अपने पशुओं की चारे की समस्या को हल कर सकते हैं और उनकी दशा में भी सुधार कर सकते है।"

एक किसान भाई ने पूछा, "डाक्टर साहब, हमारे पशुओं की सन्तान इतनी कमजोर पैदा होती है कि कितना ही कुछ खिलायें, उनकी सेहत ही नहीं बनती। कई बार

बछड़े-बछिया जन्म से ही बीमार होते हैं और इलाज कराने पर भी ठीक नहीं होते। इसके पीछे क्या कारण है। हमें इस परेशानी से बचने के लिए क्या करना चाहिए ?"

डाक्टर साहब बोले, "सचमुच ही हमारे पशुओं की गिरी हुई दशा का एक बड़ा कारण है : पशुओं के कमजोर बच्चे होना। इस स्थिति से बचने का सबसे अच्छा उपाय है कि अपनी गाय-भैंसों को कमजोर और बीमार साँड़ या भैंसे से न मिलने दें। खुद भी कमजोर व बीमार गाय-भैंस को गाभिन न करायें। जब भी अपनी गाय-भैंस को गाभिन कराना हो तब या तो उन्हें तन्दुरुस्त साँड़-भसे के पास ले जायें, या पशुओं के सरकारी अस्पताल में ले जायें, जहाँ उन्हें डाक्टरी तरीके से गाभिन कर दिया जायेगा। ऐसा करने से आप खुद ही देख लेंगे कि आपके पशुओं की सन्तान कितनी तन्दुरुस्त होगी और बीमार न होगी। आपको उसके इलाज में पैसा और वक्त बर्बाद नहीं करना होगा।"

इस तरह आज की सभा का समापन करते हुए डा० कपिल बोले, "किसान भाइयो ! यदि आप लोग सचमुच ही अपने पशुओं को तन्दुरुस्त देखना चाहते है तो इन सब बातों पर अमल करने की कोशिश कीजियेगा, जो मैंने आज की सभा में बताई हैं।"

५

गोबर की खाद व गोबर-गैस

कई दिन से डाक्टर कपिल पशु-पालन आदि के बारे में तरह-तरह की जानकारी दे रहे थे। आज उन्होंने पशु-पालन के आर्थिक पक्ष के बारे में बतलाना शुरू किया, "किसान भाइयो! आपको यह जानकर शायद आश्चर्य होगा कि पशु हमारी राष्ट्रीय आय का एक अच्छा साधन है। इसीलिए पशुओं को पशुधन कहा जाता है। आर्थिक दृष्टि से पशु आप लोगों को बहुत फायदा पहुँचाते हैं। वे आप लोगों की आमदनी का अच्छा साधन है।...

गाँवों में तो पशु खेती का आधार-स्तम्भ हैं ही, शहरों में भी इनके द्वारा माल ढोकर बहुत से व्यक्ति पैसा कमा रहे हैं। कुछ लोग दूध का व्यवसाय कर रहे है। इसके अतिरिक्त यदि गहराई से सोचें तो पशुओं का गोबर ही बहुत कीमती है। गाँवों में गोबर के उपलों को ईंधन के रूप में लाया जाता है। किसान गोबर की खाद बनाकर खेतों की उपजाऊ शक्ति बढ़ाते हैं। असल में गोबर की खाद के रूप में किसानों को अप्रत्यक्ष (छिपे हुए) रूप से काफी आर्थिक लाभ

पहुँचता है। क्योंकि उन्हें अन्य वैज्ञानिक खादों पर अधिक पैसा खर्च नहीं करना पड़ता। गोबर के द्वारा किसानों को एक तो इसी तरह की काफी आर्थिक बचत होती है। दूसरे, गोबर खाद के रूप में खेतों में पड़कर भूमि की उपजाऊ शक्ति बढ़ाकर फसलों की पैदावार बढ़ाने मे सहायक होता है। अधिक पैदावार होने से किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।···

किन्तु दुःख तो इस बात का है कि किसान लोग गोबर की कीमत को ही नहीं समझते। कुछ गोबर तो ईंधन के रूप में जला दिया जाता है। खैर, ईंधन के रूप में जलाना तो किसानों की मजबूरी समझा जा सकता है। पर बचे हुए गोबर की भी बर्बादी ही होती है। क्योंकि किसान गोबर के लिए खास जगह पर खास तरह के गड्ढे न बना कर, गोबर को ऐसे ही लापरवाही से एक जगह डालना शुरू कर देते हैं। इससे गोबर में जो उपजाऊ अंश होते है, वो कुछ तो धूप से खतम हो जाते हैं और कुछ बारिश के पानी में बह जाते हैं। इससे खाद एक तो कम मात्रा मे होती है, दूसरे, उसमें वे गुण भी अधिक नहीं होते जो धरती को उपजाऊ बनाते हैं।···

इसीलिए आज मैं आप लोगों को गोबर की खाद बनाने के खास तरीके बतलाऊँगा, जिससे कि आप लोग अधिक शक्तिशाली खाद तैयार कर सकें। अच्छे किस्म की खाद अपने खेतों में डालकर उपज बढ़ाये। उपज के साथ-साथ आपकी आमदनी भी बढ़ेगी।"

सभी किसान आश्चर्य में पड़कर एक-दूसरे का मुँह

ताकने लगे। उन्होंने तो कभी सोचा भी न था कि खाद बनाने के भी खास तरीके हो सकते हैं। इसीलिए सभी ने एक स्वर में कहा, "अवश्य बतलाइये, डाक्टर साहब। हम आपकी बातों पर पूरी तरह अमल करेंगे। क्योंकि इसमें तो हमें ही फायदा है।"

किसानों के उत्साह को देखकर डाक्टर कपिल को बहुत खुशी हुई। उन्होंने कहना शुरू किया, "खाद बनाते समय कई तरह की सावधानियां बरतने की जरूरत है। खाद बनाने के लिए गोबर को कभी समतल जगह पर इकट्ठा नही करना चाहिए। गड्ढा हमेशा ऊँची जगह पर हो, ताकि नालियों आदि का या बारिश का पानी उसमें न भर सके। दो बैलों के गोबर की खाद बनाने के लिए १० फुट लम्बा, ८ फुट चौड़ा और ३॥ फुट गहरा गड्ढा काफी है। खाद का गड्ढा साढ़े तीन फुट से ज्यादा गहरा कभी नहीं खोदना चाहिए। क्योंकि अधिक गहरे गड्ढे में गोबर को उलटा-पलटा नहीं जा सकता, और खाद अच्छी तरह सड़ नहीं पाती। इसलिए खाद के गड्ढे की लम्बाई-चौड़ाई आप बेशक बढ़ा लें, किन्तु गहराई कभी नही बढ़ाएँ।…

वैसे अच्छा यही है कि पशुओं की संख्या के हिसाब से कई गड्ढों में गोबर इकट्ठा करें। यदि हो सके तो गड्ढे का फर्श और दीवारें पक्की ईंटों और सीमेंट की बनवायें। यदि इतना पैसा खर्च नहीं कर सकते, तो चारों तरफ की दीवारों और फर्श को चिकनी मिट्टी से अच्छी तरह लीप-पोत दें, ताकि गोबर और पेशाब के तरह (पतले) रूप में खाद के जो कीमती अंश है, उन्हें मिट्टी सोख न ले। खाद के गड्ढे के

पास ही एक छोटा गड्ढा और होना चाहिए। यह गड्ढा अवश्य ही सीमेंट का हो। बड़े गड्ढे से थोड़ी निचाई पर हो। बड़े गड्ढे में से एक छोटी नाली इस गड्ढे में आती हो, ताकि खाद के गड्ढे में पड़े गोबर या खाद का तरल पदार्थ बह-बहकर इस छोटे गड्ढे में आता रहे। जहाँ पशु बाँधे जाते है, वहाँ से एक नाली भी इस छोटे गड्ढे में जाकर मिलनी चाहिए, ताकि पशुओं का पेशाब बेकार न जाये—इस छोटे गड्ढे में आता रहे। क्योंकि खाद के लिए गोबर से अधिक कीमती तत्त्व पेशाब में होते हैं। पेशाब में पौधों के पोषक तत्त्व गोबर से ज्यादा होते हैं। इन पोषक तत्त्वों का पौधों पर तुरन्त असर होता है। खाद के अधिक उपजाऊ और ताकतवर तत्त्व—यूरिया, यूरिक एसिड, फास्फेट आदि—पेशाब में तरल रूप में होते हैं। अतः पौधे इन तत्त्वो को आसानी से सोख लेते है।...

यदि पशुओं के उठने-बैठने की जगह पक्की न हो और पक्की नाली बनवाने का इन्तजाम न हो सके, तो वहाँ बालूई मिट्टी या राख की लगभग ४ इंच मोटी परत बिछा देनी चाहिए। सर्दियों में सूखे घास-फूस की तह अच्छी रहती है। क्योंकि इससे पशुओं के नीचे गरमाई रहती है। मिट्टी, राख और सूखे घास-फूस, ये तीनों ही गोबर के तरल पदार्थ और पशुओं के पेशाब को अच्छी तरह सोख सकते हैं। जब यह मिट्टी या घास-फूस की तह अच्छी तरह गीली हो जाये तब उसे हटा कर खाद के गड्ढे में डाल देना चाहिए, और तुरन्त ही पशुओं के नीचे दूसरी तह बिछायी जानी चाहिए। ऐसा करने से खाद के जरूरी व पोषक तत्त्व बर्बाद होने से

बच जाते हैं । साथ ही खाद के गड्ढे के कीटाणु गोबर और पेशाब से सनी मिट्टी या घास-फूस में पनप कर इन्हें भी खाद के रूप में बदल देते हैं । इस प्रकार खाद की मात्रा बढ़ जाती है ।…

खाद का गड्ढा यदि कच्चा हो तो पहले गड्ढे की सतह पर एक-एक फुट मिट्टी बिछा देनी चाहिए, ताकि गोबर के तरह पदार्थ और पेशाब में रहने वाले महत्त्वपूर्ण तत्त्वों को धरती के अन्दर जाने से रोका जा सके । दूसरे, इन पदार्थों को सोख कर और खाद के गड्ढे में पड़ी होने से मिट्टी भी खाद के रूप में बदल जाती है ।…

हर दिन खाद के गड्ढे में गोबर तो डालते ही हैं । पशुओं के गोबर और पेशाब से सनी हुई मिट्टी, इधर-उधर बिखरा हुआ घास-फूस और चारा आदि भी उसी में डालते रहना चाहिए। जब खाद के गड्ढे में एक-डेढ़ फुट ऊँची गोबर आदि की सतह हो जाये, तब छोटे गड्ढे में इकट्ठे हुए पशुओं के पेशाब और पानी की इस सतह पर अच्छी तरह छिड़काव कर देना चाहिए। उसके बाद फिर गोबर आदि डालना शुरू कर दें । जब फिर एक-डेढ़ फुट ऊँची सतह हो जाये तो उसी तरह छिड़काव कर दें । जब तक खाद का गड्ढा भर न जाये तब तक इसी तरह से एक के बाद दूसरी तह लगाते जायें। जब खाद का गड्ढा अच्छी तरह से भर जाये तब उसे पाँवों से अच्छी तरह दबा दें। खाद को अच्छी तरह दबाना बहुत जरूरी है। यदि खाद का ढेर अच्छी तरह से नहीं दबाया गया तो उसमें हवा घुस जाती है। जिससे दीमक लग जाती है । दीमक लगी हुई खाद में जमीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने के तत्त्व

नहीं होते। खाद का गड्ढा पोला होने से खाद के कीमती तत्त्व गैस बनकर उड़ जाते हैं और खाद सूख जाती है।...

खाद को खूब दबाने के बाद उस पर अच्छी तरह पानी छिड़कें। पानी छिड़ककर दबाने से खाद जल्दी सड़नी शुरू हो जाती है।...

लिपाई करने से खाद का गड्ढा अच्छी तरह से ढक जाता है। खाद के कीमती तत्त्व गैस बन कर उड़ नहीं सकते। बारिश का पानी भी अन्दर नहीं घुस सकता। खाद का गड्ढा अच्छी तरह ढका होने से गड्ढे में गैस का दबाव अधिक रहता है। गैस का दबाव ज्यादा होने से खाद जल्दी सड़ कर तैयार हो जाती है।...

खाद के गड्ढे के ऊपर घास-फूस का छप्पर अवश्य डाल देना चाहिए, ताकि धूप की तेजी से खेती के लिए पोषक तत्त्व नष्ट न हो सकें। बारिश का पानी खाद के अच्छे तत्त्वों को बहाकर बेकार न कर दे।...

यदि पशु अधिक हों तो खाद के लिए कई गड्ढे बनवा लें। एक गड्ढा भर जाने के बाद दूसरे गड्ढे में भी उसी प्रकार खाद आदि इकट्ठा करते जाना चाहिए। भर जाने पर इसे भी बन्द कर दें। इसके बाद तीसरे गड्ढे में गोबर आदि डालते जायें।...एक गड्ढे की खाद छः महीने में पक कर तैयार हो जाती है। इस तरह छठे महीने आपको तैयार खाद मिलती रहेगी।...

खाद के ढेर में सुपर फास्फेट (१ प्रतिशत) नाम का पाउडर मिला दें तो अच्छा है। ऐसा करने से खाद के बहुत ही कीमती तत्त्व गैस के रूप में उड़कर नष्ट होने से बच

जाते हैं। खाद के गड्ढे के ऊपर मिट्टी की तह भी बहुत हद तक खाद के जरूरी तत्त्वों को गैस बन कर उड़ने से रोकती है।...

एक बात और याद रखें—यदि एक गड्ढे की सारी खाद एक साथ काम न आये तो एक-एक महीने बाद खाद पर खूब पानी छिड़क कर उसे अच्छी तरह से उलटते-पलटते रहें। ऐसा करने से खाद अच्छी तरह सड़ती रहेगी और सूखेगी भी नहीं।...

इस तरीके से तैयार होने वाली खाद धरती के उपजाऊपन को कई गुना बढ़ा देती है। क्योंकि इसमें पौधों के पोषक तत्त्व अधिक मात्रा में पाये जाते हैं।

खाद बनाने का एक तरीका और भी है। आढ़ में से जो किसान भाई अपने पशुओं को ज्यादातर एक ही जगह पर बाँधते हों, वे पशुओं के कमरे का फर्श चार फुट गहरा खोद लें। खुदी हुई मिट्टी को तीन फुट तक बराबर फैला दें। इस तरह आँगन से कमरे की सतह एक फुट नीची रह जायेगी। मिट्टी की इस सतह पर घास-फूस या राख बिछा दें। रोज पशु को बाहर निकालने के बाद गोबर और घास आदि को सारे फर्श पर एक-सा फैला दें। फिर घास-फूस और राख की सतह बिछा दें। जब इस कमरे की सतह आँगन की सतह के बराबर हो जाये तो इस खाद को खेत में डाल दें। इस तरह की खाद सड़ने में लगभग तीन महीने लगते हैं।...

इस तरीके से तैयार की गई खाद भी धरती के उपजाऊपन और फसल को बढ़ाने के खयाल से बहुत ही अच्छी

मानी जाती है। इसमें पौधों के पोषक तत्त्व अधिकाधिक मात्रा में मिलते हैं।"

डाक्टर साहब थोड़ा रुके और सब किसानों को अपनी बात दत्तचित्त होकर सुनते देख फिर कहा, "एक बात मैं जोर देकर कहूँगा कि यदि धन की दृष्टि से आप अपनी स्थिति मजबूत करना चाहते हैं तो पशुओं के गोबर और पेशाब को कभी बेकार मत जाने दें। अक्सर होता क्या है कि बरसात के दिनों में जानवरों को बाहर ही बँधा रहने देते है। नतीजा यह होता है कि गोबर और पेशाब बरसात के पानी के साथ बह-बहकर बेकार हो जाता है। आप हमेशा एक बात याद रखें कि बरसात के मौसम में ही आप अधिक से अधिक गोबर खाद के गड्ढे में डाल सकते हैं। क्योंकि बरसात के कारण इस मौसम में उपले नहीं बनाये जाते। इस बात को ध्यान में रखकर बरसात में पशुओं को अवश्य साये में बाँधकर गोबर का अधिक से अधिक लाभ उठायें।...

खाद बनाने के मैंने जो ये दो तरीके बताये हैं, इन तरीकों से बनी हुई खाद खेतों में डालने से जमीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ती है। फसल बहुत अच्छी होती है। फल-फूलों वाली फसलों के लिए तो यह खाद बहुत ही फायदेमन्द है। इसमें पौधों के लिए सभी जरूरी पोषक तत्त्व रहते हैं। खेतों में इसे डालने का असर चार-पाँच साल तक रहता है। [illegible] एक बड़ा लाभ यह है कि यदि रेतीली मिट्टी में [illegible] खाद कई बार डाली जाये तो रेतीली मिट्टी के [illegible] धीरे आपस में चिपकने लगते हैं। इस तरह [illegible]

धीरे-धीरे उपजाऊ होती जाती है।...

गोबर की खाद का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह हर प्रकार की फसल के खेत में डाली जा सकती है। नई किस्म की खाद की भाँति ज्यादा पड़ने पर भी यह फसल को या धरती को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचाती।...

इस खाद के प्रयोग से अनाज आदि के पोषक तत्त्व ज्यों के त्यों रहते हैं। उनमें किसी तरह की कमी नहीं आती।...



हल जोत कर खाद के बड़े-बड़े ढेलों को खेत की मिट्टी में मिलाता हुआ किसान

खाद का इस्तेमाल करने में एक बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। खाद को कभी भी गड्ढे में से निकाल कर खेतों में ढेर लगा कर छोड़ नहीं देना चाहिए। ऐसा करने से खाद के कीमती तत्त्व कुछ धूप से नष्ट हो जाते हैं और कुछ गैस बन कर उड़ जाते हैं। अतः खाद की शक्ति नष्ट हो जाती है।...

इसलिए हमेशा गड्ढों में से खाद को निकालने के तुरन्त बाद ही खाद को खेतों में फैला देना चाहिए। साथ की साथ

जुताई और फिर सिंचाई कर देनी चाहिए। इससे खाद अच्छी तरह खेत की मिट्टी में मिल जायेगी और उसके पोषक अंश नष्ट होने से बच जायेंगे।...

इस प्रकार सभी किसान भाई ठीक प्रकार से खाद बनायें। उसका सही इस्तेमाल करके आप उपज को कई गुना बढ़ा कर अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत बना सकते हैं। गोबर का सबसे बड़ा आर्थिक लाभ यही है।...

जो व्यक्ति डेरी उद्योग में लगे है वे भी इसी तरीके से खाद बना कर और बेच कर अच्छी आमदनी कर सकते हैं। या फिर एक गाड़ी या ठेला भरे गोबर के दाम तय करके बहुत-सा पैसा कमा सकते है—गोबर के ही द्वारा।"

डाक्टर साहब अभी बात पूरी भी न कर पाये थे कि एक किसान से बड़े ही जिज्ञासा-भरे शब्दों में पूछा, "डा० साहब, यह गोबर-गैस का प्लांट क्या बला है। क्या आप हमें इसके बारे में नहीं बतलायेंगे ?

डाक्टर कपिल सवाल से बहुत खुश हुए। बोले, "आपने सचमुच बहुत ही अच्छा सवाल किया है। गोबर-गैस प्लांट किसानों के लिए बहुत ही उपयोगी है। कोई भी किसान भाई, जिसके पास कम से कम दो पशु है, गोबर-गैस प्लांट लगवा सकता है। वैसे आप पशुओं की संख्या के हिसाब से छोटा-बड़ा—कैसा भी गैस प्लांट लगवा सकते है। इस प्लाट का सबसे बड़ा फायदा यह है कि एक बार लगवाने के बाद इसे चलाने में किसी प्रकार का कोई खर्चा नहीं होता। इसकी देख-रेख का काम भी मुश्किल नहीं है। चलाना भी मुश्किल नहीं है। जब आप यह प्लांट लगवायेंगे

तभी लगाने वाले व्यक्ति उसकी देख-रेख करने और चलाने की सभी विधियाँ आपको बतला देंगे।...

इसे चलाने में किसी प्रकार के तेल या ईंधन की जरूरत नहीं पड़ती। बल्कि पशुओं के गोबर से ही यह प्लांट सब काम करता है। इसमें गोबर और कूड़ा-करकट डालते रहते हैं। इसी से प्लांट से खेतों के लिए खाद भी मिल जाती है, खाना बनाने के लिए ईंधन भी। घर के लिए बिजली भी। यदि ज्यादा पशुओं वाला प्लांट है तो इससे इतनी बिजली पैदा की जा सकती है कि जिससे कुट्टी काटने की मशीन, आटा पीसने की चक्की, यहाँ तक कि पानी के इंजन भी चल सकते हैं।"

-आज के भाषण को खत्म करते हुए सार रूप में डाक्टर कपिल ने समझाया, इस प्रकार आप स्वयं ही देख लीजिए कि आर्थिक दृष्टि से पशु आपके लिए कितने मददगार हैं। पशुओं के गोबर से ही आप काफी आर्थिक सहायता प्राप्त कर सकते है। जरूरत है केवल परिश्रम, लगन और जानकारी की। पशु अन्य प्रकार से भी बहुत से लोगों की जीविका चला रहे हैं। उनकी आय का साधन है। डेरी उद्योग और चर्म उद्योग इसके उदाहरण हैं। इसके बारे में मैं कल की सभा में बतलाऊँगा।"

६

डेरी उद्योग और चर्म उद्योग

कल की सभा में ही डाक्टर कपिल ने कह दिया था कि कल वे डेरी उद्योग और चर्म उद्योग के विषय में बतलायेंगे। आज आते ही उन्होंने कहना शुरू किया, "आप लोग तो जानते ही हैं कि आजकल डेरी उद्योग बहुत जोरों पर है। इसके सहारे बहुत से बेरोजगारों को रोजगार मिला है। डेरी उद्योग चलाने वाले काफी पैसा कमा रहे हैं। फिर भी हमारे डेरी उद्योग में बहुत-सी कमियाँ हैं। यदि उन्हें दूर कर दिया जाये तो उससे कई लाभ हो सकते हैं। पशुओं की दशा में सुधार हो सकता है। दूध, घी आदि साफ-शुद्ध मिल सकते हैं। आमदनी बढ़ सकती है।...

डेरी उद्योग दोनों स्तरों पर ही शुरू किया जा सकता है। छोटे स्तर पर भी और बड़े स्तर पर भी। छोटे स्तर पर डेरी खोलने के लिए १० से २५ तक दुधारू गाय-भैंस पाल ली जाती हैं। बड़े स्तर पर डेरी चलाने वाले ५० से १००-१५० तक गाय-भैंस रखते हैं।...

डेरी शुरू करते समय पहले तो जगह का चुनाव

करना बहुत जरूरी है। डेरी या तो शहर के नजदीक खोलनी चाहिए, या शहर को जाने वाली मुख्य सड़क पर, ताकि शहर तक दूध पहुँचाने और दूसरा सामान लाने-ले जाने में सहूलियत रहे।..

पशुशाला इस दृष्टि से बनानी चाहिए कि पशु उसमें स्वस्थ और प्रसन्न रहें। इस बारे में आवास-व्यवस्था के प्रसंग में बतलाया जा चुका है। हाँ, यदि डेरी में अधिक पशु हैं और उनकी देखभाल के लिए नौकर रखने हों, तो नौकरों के घर भी पशुशाला में ही होने चाहिए। इसके अलावा मालिक या प्रबन्धक के रहने की, गाय-भैंस, बैल, साँड़, बछड़े-बछिया आदि सभी के रहने की जगह अलग-अलग होनी चाहिए।...

इसके अलावा प्रबन्धक (डेरी का सब इन्तजाम करने वाले) के दफ्तर के लिए अलग कमरा हो। डेरी का सामान रखने का, दूध आदि रखने का, दूध आदि बेचने का, दूध आदि उबालने व गर्म करने, बर्तन धोने, दूध आदि को ठंडा रखने आदि सभी कामों के लिए अलग-अलग कमरे होने चाहिए। जिस कमरे में दूध, क्रीम आदि रखें वह कमरा पक्का तो हो ही, साथ ही दीवारें, छत और फर्श आदि ऐसे हों जो धुल भी सकें। यदि पैसे की कमी के कारण ऐसे कमरे न बनवा सकें तो समय-समय पर सफेदी जरूर करवाते रहें। ऐसा करने से किसी प्रकार के रोग के कीटाणु कमरे में नहीं पनप सकेंगे। दूध और दूध से बनी चीजों में कीटाणु नहीं होंगे।...

इस कमरे के दरवाजे और खिड़कियों पर दो-दो जोड़ी

किवाड़ लगवाने चाहिए। एक-एक जोड़ी शीशे के और एक-एक जोड़ी बारीक जाली के, ताकि मक्खियाँ और बाहर की धूल आदि के कण उसमें न घुस सकें।...

प्रबन्धक के दफ्तर में हिसाब-किताब के रजिस्टर रख देने चाहिए। हर बात का लेखा-जोखा रखने का अलग-अलग रजिस्टर होना चाहिए। पशुओं का पूरा ब्योरा रखने के लिए ये रजिस्टर जरूरी हैं—

(१) पशुओं के पैदा होने का रजिस्टर,

(२) पशुओं के नम्बर का रजिस्टर,

(३) पशुओं का दूध बेचने का हिसाब रखने का रजिस्टर,

(४) पशुओं के दूध देने का ब्योरा लिखने वाला रजिस्टर,

(५) पशुओं के स्वास्थ्य का रजिस्टर,

(६) पशुओं के वंश का रजिस्टर।

इन रजिस्टरों में पशु का नाम, पशु खरीदने की तारीख, जन्म-तिथि, पशु नर है या मादा, पशु की माँ का नाम, पशु बेचने की तारीख, खरीददार का नाम, पता आदि का ब्योरा होता है।

पशुओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी रजिस्टर में पशु की पहचान और नम्बर, पशु-भार, दूध की मात्रा, साल में कितने दिन दूध नहीं दिया, बीमारी का नाम, बीमार होने की तारीख, ठीक होने की तारीख आदि का ब्योरा दिया जाना चाहिए। जैसे—

पशु सम्बन्धी ब्योरा रखने से पशु का वंशानुगत (पूरे वंश का) हिसाब रहता है। जिससे पशु की उचित देख-रेख हो सकती है। उन्हें उनके लायक आहार दिया जा सकता है। उनकी बीमारियों का ठीक समय पर बढ़िया इलाज कराया जा सकता है। उनकी दशा को सुधारने की दिशा

पशु की पहचान व नंबर	पशु-भार	दूध देने की मात्रा	साल में कितने दिन दूध नहीं दिया	बीमारी का नाम	बीमार होने की तारीख	ठीक होने की तारीख

(पशुओं का स्वास्थ्य-सम्बंधी रजिस्टर)

में जरूरी कदम उठाये जा सकते हैं। दूध कम देने की स्थिति में दूध बढ़ाने के तरीके इस्तेमाल किये जा सकते है।...

एक खास बात यह भी है कि पशु बेचते समय पशु की कीमत का सही अन्दाजा लगाया जा सकता है।...

पशुओं पर नम्बर भी डाल देने चाहिए। नम्बर डालने से व पशुओं का रजिस्टर बना लेने से नौकर भी किसी तरह की चालाकी नहीं खेल सकते। दूध को या पशु को इधर-

उधर नहीं कर सकते।···

इन रजिस्टरों के अलावा दूध के कुल उत्पादन (पैदावार) और दूध बेचने का रजिस्टर भी बना लेना चाहिए। इससे खर्च और आमदनी का पूरा-पूरा हिसाब रहता है। नौकर या साझीदार किसी प्रकार का घोटाला नहीं कर सकते।···

डेरी के इस्तेमाल में आने वाले सभी बर्तन कम से कम जोड़ों वाले और अच्छी धातु के होने चाहिए। दूध दुहने का



सूक्ष्म दर्शक यन्त्र से दूध की जांच करता हुआ व्यक्ति

बर्तन बाल्टीनुमा हो, जिसका आधा मुंह ढका हुआ हो। दूध रखने के केन, जिसमें ७०-८० किलो तक दूध आ जाये, दूध

छानने की खास तरह की छलनी (फिल्टर) और दूध बांटने के बर्तन भी पर्याप्त मात्रा में व अच्छी किस्म के हों।...

कुछ डेरियां तो ऐसी हैं, जिनमें केवल अपनी ही गाय-भैंसों का दूध बेचा जाता है। कुछ डेरियों के मालिक अन्य लोगों से भी दूध इकट्ठा करके तब बेचते हैं। ऐसे डेरी वालों को अच्छे-बुरे दूध की पहचान करने के लिए कुछ खास तरह के यन्त्र रखने चाहिए। जैसे—लैक्टोमीटर।...

दूध में कीटाणुओं की जांच करने के लिए सूक्ष्मदर्शक यन्त्र का इस्तेमाल करना चाहिए।...

दूध में कितनी चिकनाई है—इस बात की जांच 'सेंट्रीफ्युगल' नामक यन्त्र से करते हैं। गर्बर परीक्षण यन्त्र का पूरा सैट इस काम के लिए डेरी में रखना चाहिए।

इनके अतिरिक्त मक्खन आदि निकालने के लिए भी आजकल नये-नये किस्म के यन्त्र बन गये हैं। 'क्रीम सैपरेटर' नामक यन्त्र से दूध में से क्रीम को अलग कर लिया जाता है और दूध को अलग।...

मक्खन निकालने के यन्त्र भी कई तरह के आने लगे हैं—कुछ स्टील के, कुछ कांच के और कुछ लकड़ी के। कांच के यन्त्र घरेलू इस्तेमाल के लिए तथा लकड़ी के यन्त्र बड़ी-बड़ी डेरियों के लिए अच्छे रहते हैं।...

दूध में से मक्खन निकालने से पहले हाथों में दस्ताने जरूर पहनने चाहिए। यदि दूध कई दिनों तक रखना हो तो दूध को 'निर्जीवीकरण यन्त्र' में रखकर उसे १२० से० मी० तापमान पर भाप के द्वारा गरम करके फिर एकदम ठंडा करके रख देते है।...

डेरी की सफलता सबसे अधिक इस बात पर निर्भर करती है कि पशु अच्छी नस्ल के हों। डेरी खोलते समय शुरू में गाय-भैंस चाहे थोड़ी ही लें, किन्तु तन्दुरुस्त हों। पैसे के लालच में जो व्यक्ति अस्वस्थ पशु खरीद लेते हैं, उन्हें बाद में पछताना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति डेरी उद्योग में असफल होते थे। क्योंकि गाय-भैंस की खुराक तो स्वस्थ पशु के जितनी और कभी-कभी उससे भी ज्यादा होती है। किन्तु वह दूध उस मात्रा में नहीं दे सकती। इस तरह आमदनी से ज्यादा खर्च होने लगता है। दूसरे, कमजोर या बीमार पशु के इलाज पर पैसा, और समय भी बहुत बर्बाद होता है। कई बार सस्ते पशु के लालच में लोग धोखे से ऐसा पशु भी खरीद लेते हैं, जिसे छूत की बीमारी होती है। नतीजा यह होता है कि अन्य पशु भी बीमारी के शिकार होकर मरने लगते हैं। इसी कारण कई बार डेरी का धन्धा शुरू करने वालों को भिखारी होते भी देखा गया है।

असल में अच्छी किस्म के पशु डेरी उद्योग की सफलता की कुंजी हैं। यदि पशुओं को खूब सोच-विचार कर खरीदा जाये और उनकी अच्छी तरह देखभाल की जाये तो डेरी उद्योग रंक को राजा भी बना सकता है।

डाक्टर साहब फिर बोले, "दूध दुहने से पहले भी कई सावधानियाँ बरतने की जरूरत है। दूध दुहने से एक-डेढ़ घंटे पहले कमरे को अच्छी तरह साफ कर लें। दुहने से कुछ देर पहले पशु के पिछले हिस्से को पानी से धोकर ब्रश से झाड़ दें। ब्रश से झाड़ देने से टूटे हुए बाल, गोबर, मिट्टी झड़ जाती है। पशु चुस्त हो जाता है। दूध भी अधिक मात्रा में देता है।

गाय-भैंस के थनों और हवाने को किसी साफ गीले कपड़े से पोंछना चाहिए।…

दूध के बर्तनों को पहले ही अच्छी तरह से साफ कर लेना चाहिए।…

गाय-भैंस को दुहने से दो-ढाई घंटे पहले ही चारा खिला देना चाहिए। नहीं तो साइलेज, गाजर, शलगम की खुशबू दूध में भी आती है।…



उंगलियों और हथेलियों के बीच में थनों को दबाकर
दूध दुहना बेहतर है

दूध दुहने वाला व्यक्ति साफ-सुथरा होना चाहिए। उस कोई बीमारी न हो। दूध दुहने से पहले हाथ धोकर अच्छी तरह पोंछ लेने चाहिए। एक पशु का दूध दुहने के बाद हाथ

धोकर ही दूसरे पशु का दूध दुहना चाहिए।···

दूध की पहली धार अलग निकलनी चाहिए। क्योंकि दूध दुहने बाद थनों में कीटाणु घुस जाते है अतः यदि पहली धारें भी दूध के बर्तन में निकाली गई तो सारा दूध ही दूपित हो जायेगा। दूध हमेशा मुलायम हाथों से थनों को उँगलियों और हथेलियों के बीच में दबाकर जल्दी-जल्दी और सारा दुहना चाहिए।···

दूध हमेशा एक ही समय पर दुहना चाहिए। दूध दुहने के समय में १२ घंटे का फर्क हो। जो पशु ज्यादा दूध देते हैं उन्हें दिन में तीन बार आठ-आठ घंटे के बाद दुहा जाता है।

इस प्रकार डेरी उद्योग सम्बन्धी चर्चा समाप्त करते हुए डाक्टर साहब ने कहा, "मैंने डेरी उद्योग सम्बन्धी जो बातें बतलायी हैं और कुछ सावधानियाँ बरतने की सलाह दी है, उन पर यदि आप अमल करें तो इस धन्धे में आपको अद्‌भुत सफलता मिल सकती है। इसके अतिरिक्त आप लोगों को साफ-सुथरा दूध दे सकते हैं, जो कि आपका नैतिक कर्त्तव्य है।"

डेरी उद्योग के विषय में बतलाने के बाद डाक्टर कपिल ने सोचा कि हमारे देश में मृत पशुओं की खाल और चमड़े का कहीं इस्तेमाल नहीं किया जाता। अतः पशुपालकों को चर्म उद्योग के महत्त्व के बारे में बतलाना भी उनके हित में ही होगा। इसलिए उन्होंने कहा, "डेरी उद्योग की तरह चर्म उद्योग भी राष्ट्रीय आय का एक अच्छा साधन है। संसार में कुअ जितना चमड़ा होता है, उसका ३२ प्रतिशत यायी कि १०० में से ३२ हिस्से चमड़ा भारत में ही होता है।

फिर भी भारत में मरे हुए पशुओं का पूरा फायदा नहीं उठाया जाता। पशु-शरीर का बहुत-सा चमड़ा, सींग, खुर आदि बेकार हो जाते हैं। यदि इनका सही उपयोग हो तो आय बढ़ सकती है।...

भारत सरकार का ध्यान भी चमड़े आदि की बर्बादी पर गया। इसीलिए कई जगह प्रशिक्षण केन्द्र खोले गये हैं। जहाँ मरे हुए पशुओं का चमड़ा उतारने, खाल अलग करके साफ करने, उनका उपयोग करने और हड्डी, चर्बी, सींग, खुर आदि का सही इस्तेमाल करने के तरीके सिखाये जाते है।...

अच्छा हो यदि बेरोजगार नवयुवक इन केन्द्रों में ट्रेनिंग लेकर चर्म उद्योग शुरू करें, चर्म उद्योग से सम्बन्धित मशीन लगवायें। उनमें प्रशिक्षित व्यक्ति रखें। इससे बेरोजगारों को काम भी मिलेगा, आय भी अच्छी होगी और मृत पशुओं के रूप में राष्ट्रीय सम्पत्ति भी बर्बाद होने से बच जायेगी। पशुओं के चमड़े को खाल बनाने के काम में खून, हड्डी आदि को खाद और दवाई आदि के काम में लाकर अपनी आमदनी को भी बढ़ाया जा सकता है।"

आप में से यदि किसी के पशु की मृत्यु हो जाती है, तो उसे किसी ऐसे ही चर्मालय में पहुँचवाने की कोशिश करें। जहाँ इस उद्योग के प्रशिक्षित व्यक्ति हों। कई गो-सदनों में चर्म उद्योग भी व्यवस्था है। यदि आपके आस-पास ऐसा कोई सदन है तो आप अपने मृत पशु को वहाँ पहुँचाएँ। इसे आपको भी मृत पशु के उचित दाम मिलेंगे और पशु शरीर का सही उपयोग भी हो सकेगा।"

आज सभा का अंतिम दिन था। अतः आज डाक्टर

कपिल ने सभी को धन्यवाद देने के स्वर में कहा, "मैं आप लोगों का बहुत आभारी हूँ कि आपने बहुत ध्यान से व शांति पूर्वक मेरी बातें सुनीं। साथ ही मैं आशा करता हूँ कि मेरे द्वारा दी गई जानकारी का आप पूरा-पूरा फायदा उठायेंगे। अपने पशुओं के स्वास्थ्य का ध्यान रखेंगे। उनके आवास-आहार आदि का अच्छा इन्तजाम करेंगे! हर तरह से पूरी-पूरी देखभाल करेंगे। साथ ही पशुओं के गोबर, दूध और चमड़े आदि का सही-सही इस्तेमाल करके अपनी आमदनी भी बढ़ायेंगे और राष्ट्रीय आय बढ़ाने में भी सहयोग देंगे।"

बाद में ग्राम-प्रधान ने डाक्टर कपिल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सभा का समापन किया। सभी संतुष्ट मन और यह संकल्प लिये हुए अपने-अपने घरों को गये।

□□